जैन तीर्थवंदना

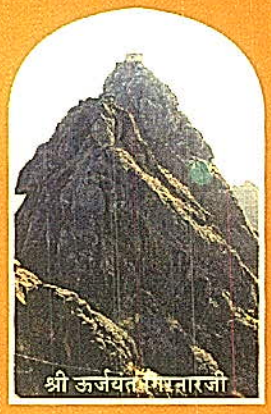

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2543

VOLUME : 8 ISSUE : 2 MUMBAI, AUGUST 2017 PAGES : 40 PRICE : ₹25

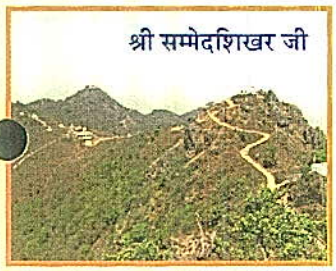

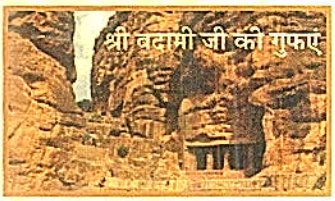

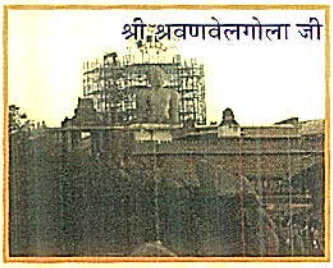

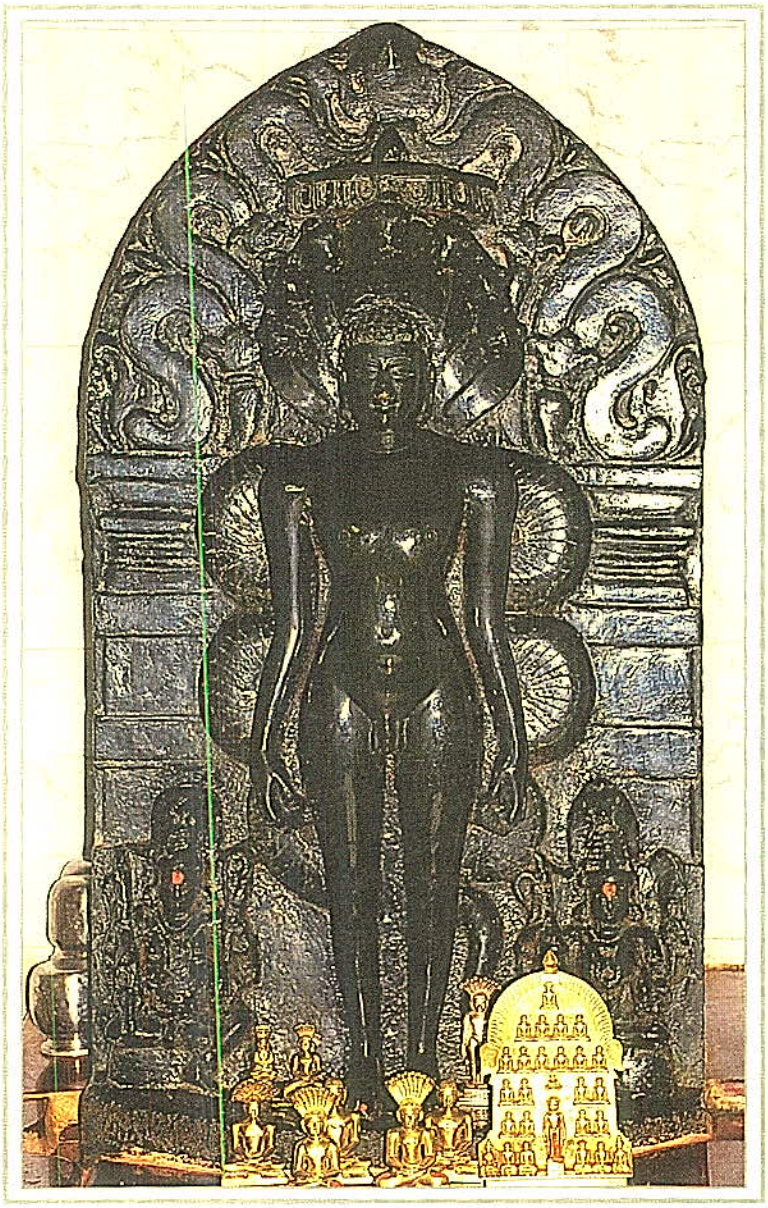

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान, वन्शी (कर्नाटक)

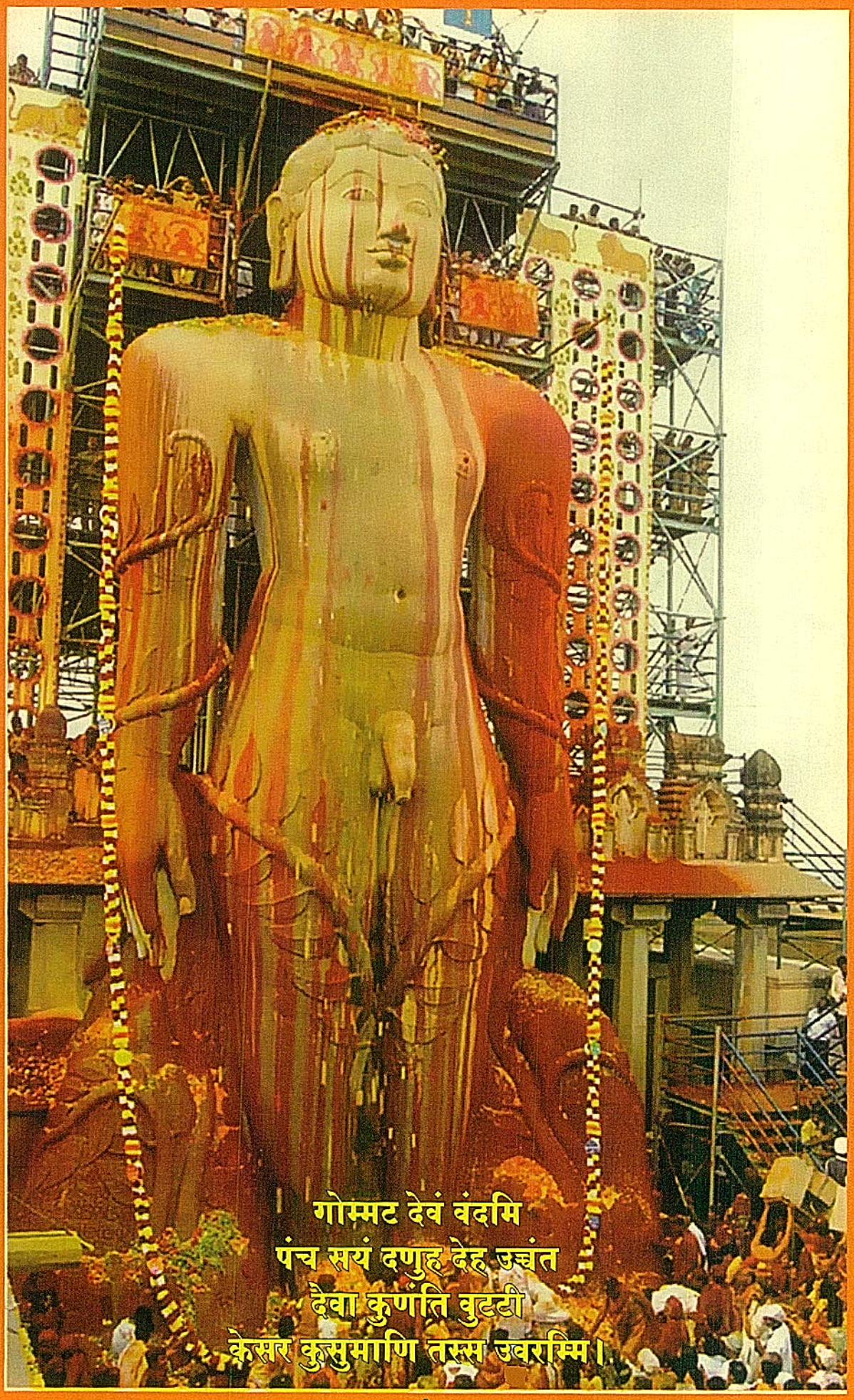
गोम्मट देवं वंदमि
पंच सयं दणुह देह उच्चंत
देवा कुणंति वुट्टी
केसर कुसुमाणि तस्स उवरम्मि।

दशलक्षण में तीर्थ विकास हेतु दान अवश्य दें

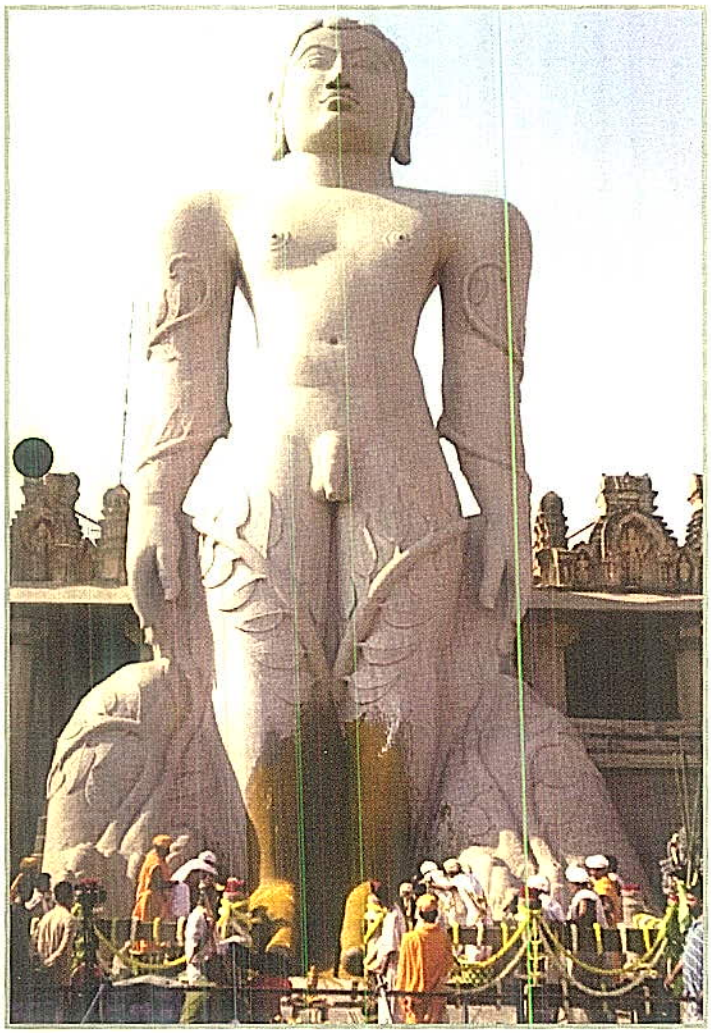

चातुर्मास स्थापित हो गए, जहाँ-जहाँ हमारे साधुगण हैं वहाँ निरंतर धार्मिक आयोजन जारी हैं। जब तीर्थवंदना आपको मिलेगी तब आप हमारे आध्यात्मिक पर्व दशलक्षण (पर्यूषण) पर्व की तैयारियां कर रहे होंगे। पर्युषण (दशलक्षण) व्रत इस वर्ष भाद्रपद शुक्ल ५ शनिवार से २६ अगस्त से भाद्रपद शुक्ल १४ मंगलवार, ५ सितंबर २०१७ तक रहेंगे। इन पर्वों में हम उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आंकिचन्य, ब्रह्मचर्य धर्म की आराधना हमारे स्वयं के कल्याण के लिए करते हैं।

त्याग व अध्यात्म का यह पर्व वैसे तो वर्ष में तीन बार आता है लेकिन हम लोग वर्षाकाल में इसे बहुत उत्साह से मनाते हैं क्योंकि हमारे साधु इस दौरान चातुर्मास हेतु विराजित होते हैं। हमें वे धर्म क्रियाओं से जोड़ते हैं। इस दौरान हमें समझना है कि धर्म क्या है?

वर्तमान समय में जीवन विसंगतियों से भरा हुआ है। जीवन में प्रेम स्नेह की जगह घृणा, शांति-सद्भावना की जगह 'भय' का स्थान स्थापित होता जा रहा है। आपसी सद्भाव, सहानुभूति, करुणा, संवेदनशीलता समाप्त होती जा रही है। ऐसी स्थिति में हमारे पास एकमात्र सम्बल है 'धर्म'। धर्म हमारे जीवन में अन्त:करण में शुचिता व पवित्रता लाता है। धर्म के द्वारा ही हमारे खाली जीवन में ऊर्जा का संचार होता है। धर्म ही हमें बताता है कि इस जीवन का उद्देश्य क्या है। धर्म हमारे जीवन का आधार है और ये आधार हमें दशलक्षण धर्म प्रदान करते है।

इस पर्व के पूर्व अष्टान्हिका पर्व हमने मनाये, षोड़सकारण पर्व ७ अगस्त से प्रारंभ है। हमने सात सौ मुनियों की रक्षा के स्मरण का पर्व रक्षाबंधन मनाया। पर्व निरंतर हमें अपनी आत्मा से जोड़ने में सहभागी होते हैं। पर्व हमें दान की प्रेरणा भी प्रदान करते हैं।

मैं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की अध्यक्ष होने के नाते आपको अवगत कराना चाहती हूँ कि ११७ वर्ष प्राचीन यह संस्था तीर्थों के विकास हेतु समर्पित है, दशलक्षण धर्म में 'उत्तम त्याग' का एक दिन आता है यह दिन हमें त्याग करने व दान करने की प्रेरणा देता है। एक अंग्रेज विचारक ने कहा है -

Wealth is not his that has it but his that enjoy it.

मतलब है कि 'धन उसका नहीं है जिसके पास वह है, बल्कि उसका ही धन सार्थक होता है जो उसका सदुपयोग करता है।'

तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार आपसे आग्रह करता है कि तीर्थों के संरक्षण, विकास, संवर्धन के लिए अपने धन का सदुपयोग कीजिए, तीर्थक्षेत्र कमेटी को मजबूत कीजिए।

साथ ही निवेदन है कि तीर्थक्षेत्र की यात्रा करके अपनी पीढ़ी को तीर्थयात्रा के संस्कार देना भी बहुत बड़ा काम है, तीर्थों पर जाकर वहाँ अपने आपको समर्पित करें, बच्चों के हाथ में कलश देकर उन्हें अभिषेक कराये, सामूहिक पूजन करें, भक्ति करें यह भी संस्कारों का दान ही है।

गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी के महामस्तकाभिषेक हेतु मात्र छह माह शेष हैं, यह आयोजन जैन जगत का सबसे बड़ा व सर्वमान्य आयोजन है, हमारी अस्मिता हमारी एकता का महान उत्सव है। मैं सम्पूर्ण भारतवर्ष की दिगम्बर जैन समाज व हमारे साधुवृंदों से आग्रह करना चाहती हूँ कि पर्युषण पर्व के दौरान गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी पर आधारित नाटक, प्रश्नमंच, झाँकी, रंगोली, क्विज आदि का आयोजन करें, देशभर में एक सन्देश जाए कि गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबलीजी की जानकारी सबको है। यह जानकारी हम सबको तो है ही साथ ही हमारे बच्चे इस जानकारी से लबरेज हो कि श्रवणबेलगोला भारतीय श्रमण संस्कृति, दिगम्बरत्व का बहुत बड़ा केन्द्र है जहाँ यह आयोजन विश्वव्यापी है, जहाँ हमारी एकता का शंखनाद होता है। भगवान बाहुबली के दरबार में सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज बिना किसी भेदभाव के सब एक ही रंग में रंगे नजर आते हैं। पूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्तिजी भट्टारक महास्वामीजी के नेतृत्व में यह आयोजन अभूतपूर्व होने जा रहा है। परमपूज्य आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज ससंघ सहित लगभग १०० पिच्छीधारी संत श्रवणबेलगोला में चातुर्मास कर रहे हैं। अनेक संत श्रवणबेलगोला पहुँचेंगे।

अधिक से अधिक संख्या में हम श्रवणबेलगोला पहुँचे इस हेतु समाज की बैठकें करें, सामुहिक यात्राएं निकाले, गोम्मटेश्वर को शीश नवाएं, श्रवणबेलगोला पहुँचे। ऐसा मेरा आपसे आग्रह है।

आपके जीवन में दशलक्षण धर्म प्रकट होकर आपके जीवन को समुन्नत बनाये। संस्कारों का शंखनाद हो, धर्म की जय-जयकार हो, समाज में सद्भावना हो, सभी दानतीर्थ की ओर प्रवृत्त हो। साधु सेवा में संलग्न रहें, स्व-पर कल्याण के मार्ग पर चलते हुए सभी का कल्याण हो। इसी भावना के साथ

जय जिनेन्द्र - जय गोम्मटेश

Sarita Jain

- सरिता एम.के.जैन

श्रवणबेलगोला के बाहुबली एवं महामस्तकाभिषेक परम्परा

-डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

मूर्ति बहुत ऊँची हो तो उसमें सुन्दरता नहीं होती, ऊँची और सुन्दर भी हो तो उसमें देती बल नहीं होता, जहाँ ऊँचाई, निजी सुन्दरता एवं देवी बल सभी सम्मिलित हैं (ऐसे) गोम्मटेश्वर जिन का दिव्य रूप आदरणीय (पूजनीय) है।

1180 ई. के कवि वोप्पण का उक्त कथन भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली की अद्वितीयता का बखान करने में सक्षम है। चन्द्रगिरि [illegible] एवं इस अंचल में पाई जाने वाली लिपि एवं रेखाचित्र श्रवणबेलगोला के इतिहास को 5000 वर्ष पूर्व तक ले जाते हैं।

श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु का 12 वर्षीय दुर्भिक्ष से पूर्व अपने 12000 शिष्यों सहित उज्जयिनी से दक्षिण की ओर गमन का ऐतिहासिक साक्ष्य सर्वविदित है। इसी श्रवणबेलगोला में आचार्य भद्रबाहु की समाधि एवं नवदीक्षित मुनि चन्द्रगुप्त (299 ई.पू.) द्वारा अपने गुरु की सेवा के शिलालेखीय साक्ष्य भी उपलब्ध हैं। किन्तु इस क्षेत्र की गरिमा एवं प्रतिष्ठा में उस वक्त चार चाँद लग गये जब गंगवंशीय नरेश राचमल्ल चतुर्थ के सेनापति एवं अमात्य वीर चामुण्डराय ने अपनी माला काललां देवी की प्रेरणा से इस विशाल मूर्ति का श्रवणबेलगोला की एक दूसरी पहाड़ी विंध्यगिरि पर निर्माण कराया। चामुण्डराय के इस प्रशंसनीय कार्य से आचार्य भद्रबाहु के [illegible]ण संस्कृति के प्रचार-प्रसार के कार्य को गति मिली।

इस मूर्ति की विशालता से मानव बुद्धि को सदैव चुनौती मिलती रही। भारत में प्रचलित मापन पद्धतियों में इसे मापने के अनेक प्रयास हुये हैं फलत: कई भ्रांतियाँ भी फैली। मैं यहाँ कतिपय प्रयासों को उद्घृत कर रहा हूँ

बुकनान - 70' 3" (अर्थात् 70 फीट, 3 इंच)

सर आर्थ वेल्स्लि- 60' 3"

बौनिंग -57'

बर्कमन-58'

लोकवास्तु विभाग- 56'

कविचक्रवर्ती शांतराज पंड़ित-36-1/8 हाथ

आर नरसिंहाचार-57'

मैसूर पुरातत्व विभाग-58'

भारतीय कला इतिहास संस्थान-कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ द्वारा थियोडलैट उपकरण से-58',8" (1980 ई. में)

(आधार-श्रवणबेलगोला सचित्र अध्ययन द्वारा ष: शेट्टर)

यह माप सर्वाधिक प्रामाणिक एवं वर्तमान में मान्य है हमारे कुछ पाठकों ने इस विषय में जिज्ञासा भेजी थी फलत: यह वर्णन विस्तार से दिया है। अब हम इनके अंगों की विस्तृत माप दे रहे हैं।

पाँव की ऊँचाई-2',8"

गर्दन से सिर की चोटी तक-11',0"

पाँव के आदि से घुटने तक-15',2"

बाहुओं की लम्बाई-30',0"

पाँव के आदि से कमर रेखा तक-31',4"

शिश्न की लम्बाई-4'.0"

पाँव के आदि से नाभि तक-38'.1"

कानों की लम्बाई-5'.10"

पाँव के आदि से गर्दन रेखा तक-45'.10"

नाक की लम्बाई-3'.9"

पाँव के आदि से गर्दन तक-57'-8"

हाथ की लम्बाई-

घुटने से कमर रेखा तक-16'.2"

कलाई से बीच की अंगुली की लम्बाई-6'.0"

कलाई से तर्जनी तक लम्बाई-7'.0"

कलाई से अंगूठे तक-5'.0"

कुल ऊँचाई-58'.8" (58 फीट 8 इंच)

पुन: 13 मार्च 981 ई. रविवार को शुभ मुहूर्त में इस मूर्ति की प्रतिष्ठा एवं प्रथम अभिषेक सम्पन्न हुआ इस मूर्ति की विशालता के कारण ही इसके अभिषेक को महामस्तकाभिषेक की संज्ञा प्रदान की गई है। आजकल छोटी-छोटी मूर्तियों के अभिषेक को भी महामस्तकाभिषेक की संज्ञा दी जाने लगी है जो तर्कसंगत नहीं

लगता। जैन आगमों एवं दक्षिण भारत की प्रशस्त पारम्परा के अनुरूप प्रारम्भ से अब तक हुए समस्त महामस्तकाभिषेकों में इस मूर्ति का पंचामृत अभिषेक ही हुआ है। सभी महामस्तकाभिषेक का व्यवस्थित रिकार्ड तो उपलब्ध नहीं है किन्तु जितनी जानकारी उपलब्ध हो सकी है उसके अनुसार अब तक निम्नांकित महामस्तकाभिषेक हो चुके हैं :-

981 ई. (13 मार्च) चामुंण्डराय द्वारा प्रथम अभिषेक

1398 ई. (31 जनवरी) पण्डिताचार्य(संभवत: मठ के स्वामीजी) द्वारा

1612 ई. शान्तिवर्णी द्वारा

1659 ई. मैसूर नरेश दोड्ड देवराज वाडियार द्वारा

1672 ई. मैसूर नरेश दोड्ड देवराज वाडियार द्वारा

1675 ई. मैसूर नरेश दोड्ड देवराज वाडियार द्वारा

1677 ई, मैसूर राज के महामंत्री विशालाक्ष द्वारा(अनन्त कवि द्वारा प्रत्यक्ष वर्णन)

1800 ई. मैसूर महाराज के महामंत्री भुम्मादी कृष्णराज वाडियार (शिलालेख)

1825 ई. पुन: कृष्णराज वाडियार द्वारा (पं. शांतिराज का शिलालेख)

1827 ई. एक और मस्तकाभिषेक हुआ (शिलालेख क्र. 118)

1871 ई. कैप्टन मैकेन्जी द्वारा वर्णित इंडियन एक्टीकेरी भाग-2 (प्रलक्षदर्शी)

1887 ई. (14 मार्च) पू. भट्टारक लक्ष्मीसेनजी, कोल्हापूर द्वारा

1900 ई. पू. भट्टारक लक्ष्मीसेन जी, कोल्हापुर द्वारा

1910 ई. (30 मार्च) भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा

1925 ई. (15 मार्च) भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा

1940 ई. (26 फरवरी) मैसूर राज्य के तत्वावधान में

1953 ई. (5 मार्च) मैसूर राज्य के तत्वावधान में (प्रस्तावित)

1967 ई. (30 मार्च) कर्नाटक शासन एवं एस.डी. जे.एम.आई.मैनेजिंग कमेटी के तत्वावधान में

1981 ई. (22 फरवरी) एस.डी.जे.एम.आई.मैनेजिंग कमेटी के तत्वावधान में

1993 ई. (14 दिसम्बर) एस.डी.जे.एम.आई.मैनेजिंग कमेटी के तत्वावधान में

2006 ई. (8-19फरवरी) एस.डी.जे.एम.आई.मैनेजिंग कमेटी के तत्वावधान में

2018 ई. (17-26 फरवरी) एस.डी.जे.एम.आई.मैनेजिंग कमेटी के तत्वावधान में (प्रस्तावित)

उक्त सभी महामस्तकाभिषेकों में सुदूर प्रान्तों से आकर लाखों भक्तों ने अपने नयनों को तृप्त किया है। आप भी 17-26 फरवरी 2018 हेतु अपना कलश आरक्षित करायें एतदर्थ प्रान्तीय समितियों से सम्पर्क करें। 13 मार्च 981 ई को स्थापना एवं प्रथम महामस्तकाभिषेक के बाद प्रथम महामस्तकाभिषेक का प्रथम उल्लेख 31 जनवरी 1398 ई. का मिलता है जिसमें इसके पूर्व 7 महामस्तकाभिषेकों को सम्पन्न कराये जाने का लेख है किन्तु उनकी तिथियाँ उपलब्ध नहीं हैं। पण्डिताचार्य संभवत: किसी मठ के प्रबन्धक या भट्टारक स्वामी जी का नाम होगा। 1677 ई के बाद पूरी शताब्दी में भी महामस्तकाभिषेक का उल्लेख नहीं मिलता। यदि कर्नाटक के शास्त्र भंडार टटोलेगे तो कोई यात्रा वृतान्त या मस्तकाभिषेक का वृतान्त जरूर मिलेगा। ऐसा लगता है कि पूर्व में भी समय-समय पर विशेष प्रसंगों पर साधुसंतों को बुलाकर समारोह पूर्वक महामस्तकाभिषेक कराने की परम्परा थी जिसे बाद में 12 वर्षीय कर नियमित किया गया हैं।

श्रमण संस्कृति की इस अनमोल धरोहर को सहेजकर रखने हेतु मैं भट्टारक परम्परा का वन्दन करता हूँ एवं सभी पाठकों से आग्रह कि श्रवणबेलगोला जाने का कार्यक्रम अवश्य बनाये।

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 8 अंक 2 अगस्त 2017

श्रीमती सरिता एम.जैन	अध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन पी.एन.सी.	उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल एम.दोशी	उपाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	उपाध्यक्ष
श्री पंकज जैन	उपाध्यक्ष
श्री हुकम जैन 'काका'	उपाध्यक्ष
श्री संतोष पेंढारी	महामंत्री
श्री शिखरचंद पहाड़िया	कोषाध्यक्ष
श्री विनोद बाकलीवाल	मंत्री
श्री वीरेश सेठ	मंत्री
श्री शरद जैन	मंत्री
श्री खुशाल जैन सी.ए.	मंत्री

प्रधान संपादक
प्रो.अनुपम जैन, इंदौर

संपादक
उमानाथ दुबे

परामर्श मंडल

डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर', नागपुर
श्री शांतिलाल जैन जांगड़ा, उदयपुर
प्रो.डॉ.अजित दास, चेन्नई
प्रो.डी.ए.पाटील, जयसिंगपुर
श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, नागपुर
श्री स्वराज जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र महावीर, सनावद

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

दशलक्षण में तीर्थ विकास हेतु दान अवश्य दें	3
श्रवणबेलगोला के बाहुबली एवं महामस्तकाभिषेक परम्परा	5
गुरु बिना ज्ञान नहीं, ज्ञान बिना आत्मा नहीं	9
पर्यूषण पर्व का ध्येय : विकृति का विनाश और विशुद्धि का विकास	13
मानव जगत में अदभुत क्रान्ति पैदा करता है पर्युषण	15
कलशों में भरा हुआ है बाहुबलि दर्शन	17
श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिषेक	18
पर्व के दस दिन युवा एवं तीर्थ	19
Accelerated the Temple building activities	24
कनकगिरि के प्रभावी पार्श्वनाथ	30
भगवान बाहुबली की विशाल मूर्ति	32

अनुरोध

भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली– श्रवणबेलगोल के आगामी महामस्तकाभिषेक 2018 के निमित्त सम्पूर्ण देश में उत्साह का वातावरण है। लाखों की संख्या में धर्मनिष्ठ श्रावक–श्राविकायें इस निमित्त आगामी 6 माहों (सितम्बर 17–फरवरी 18) में श्रवणबेलगोल महातीर्थ की यात्रा का कार्यक्रम बना रहे हैं। जैन तीर्थों के संरक्षण, संवर्द्धन, प्रचार एवं प्रसार हेतु समर्पित आपकी पत्रिका '**जैन तीर्थ वन्दना**' ने भी इस पावन अवसर पर अपने दायित्व को स्मरण करते हुए दक्षिण भारत पर विशेष सामग्री देने का निश्चय किया है। जुलाई–2017 से यह क्रम प्रारम्भ हो चुका है।

सभी पाठकों विशेषतः सुधी लेखकों / विद्वानों से अनुरोध है कि वे दक्षिण भारत के तीर्थों से सम्बद्ध अपने आलेख, महामस्तकाभिषेक एवं श्रवणबेलगोल से सम्बद्ध यात्रा विवरण, समीक्षात्मक, सर्वेक्षणात्मक, शोधात्मक लेख या अन्य समायोजित सामग्री हमें महामस्तकाभिषेक तक नियमित रूप से भिजवायें। हम एतदर्थ आपके आभारी रहेंगे।

डॉ. अनुपम जैन

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

परम पूज्य, गुरुवर प्रज्ञाश्रमण आचार्य श्री 108 देवनन्दी जी महाराज की 54वीं जन्म जयंती पर गुरुदेव के श्रीचरणों में शत् - शत् नमन

15-08-2017

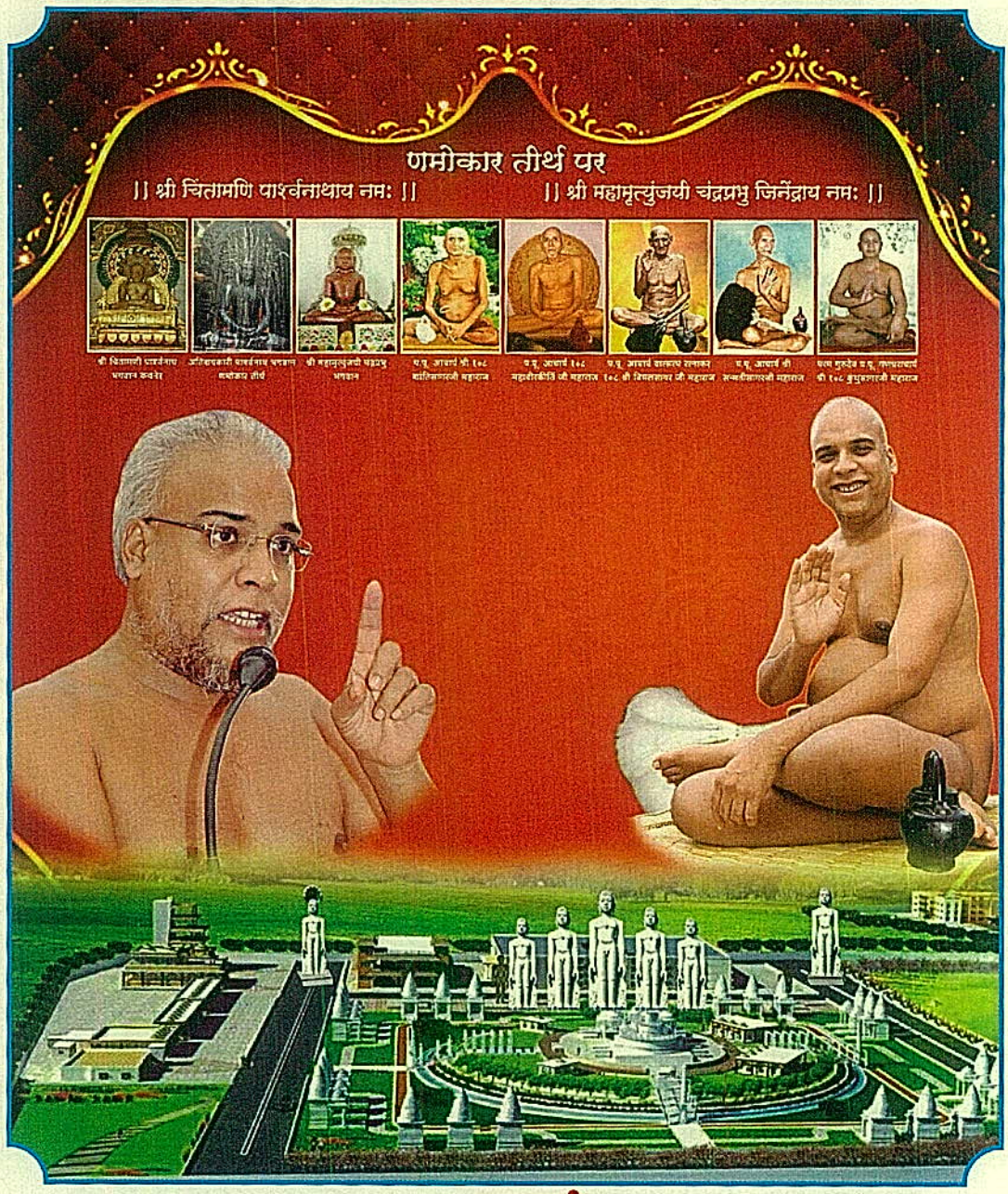

नमनकर्ता

दिनेश सेठी, संगीता सेठी, आशीष सेठी, डॉ. मीनल सेठी, चेन्नई

JAIN STEELS & ALLOYS
VARDHMAN AGENCY
REGAL TRANSWAYS PVT. LTD.

11, Sembudoss Street, Chennai-600 001
044-25231119, 25246193, 42181488, Mobile.: 9444031114, jainsteels_alloys@yahoo.com

गुरु बिना ज्ञान नहीं, ज्ञान बिना आत्मा नहीं
ध्यान, ज्ञान, धैर्य और कर्म सब गुरु की ही देन है

प्रज्ञा, श्रमण, ज्ञान योगी सारस्वताचार्य, राष्ट्रसंत आचार्य श्री 108 देवनंदी जी महाराज के चरणों में शत् शत् नमन

आचार्य श्री 108 देवनन्दी जी महाराज का जन्म 15 आगस्त 1963 को बुंदेलखंड के शाहगढ ग्राम में श्री प्रेमचंद श्री व श्रीमती शीला देवी सिंघई के आंगन में हुआ। इनके बचपन का नाम मुलायम था! इन्होंने 16 वर्ष की आयु में ही गृहत्याग कर दिया था। 31-3-1982 को हासन (कर्नाटक) में गणाधिपति, गणधराचार्य श्री 108 कुंथुसागरजी महाराज से मुनि दीक्षा प्राप्त की! इनके शिक्षागुरु आचार्य श्री 108 कनकनन्दी जी महाराज थे।

आचार्य श्री देवनन्दी जी महाराज का बाह्य व्यक्तित्व सरल, सहज, मनोरम है, किंतु अंतरंग तपस्या में बज्र से कठोर साधक हैं। बुंदेलखंड के होते हुये भी आचार्य श्री को मराठी, कन्नड़ आदि भाषाओं पर अच्छी पकड़ है। आचार्य श्री को 5-4-1998 जटवाड़ा (महाराष्ट्र) में आचार्य पद प्रदान किया गया। आचार्य श्री ने 40 से भी ज्यादा ग्रंथों का लेखन किया है जिसमें देवशिल्प, वास्तुवैभव, मंत्रसंहिता, वास्तुचिंतामणी आदि ग्रंथ प्रमुख है। वास्तु चिंतामणि व देवशिल्प नामक ग्रंथ श्रावको के लिए अपना मकान बनाने व मंदिर आदि बनाने में काफी सहायक हैं।

आचार्य श्री के दर्शन पाने का प्रथम सौभाग्य मुझे 2007 में श्री कनकगिरी क्षेत्र (मैसूर) में प्राप्त हुआ। तदुपरात जब आचार्य श्री के संघ का विहार तामिलनाडु में हुआ तो संघ का करीब से दर्शन पाने का अवसर मिला। इसके बाद तो आचार्य श्री व संघ के सभी साधुओं का वात्सल्य पाकर हम लोग संघ से जुड़ते चले गये। 5-4-2008 को मेलसित्तामूर में चेन्नई समाज द्वारा आचार्य श्री को चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंट किया गया जिसे आचार्य श्री ने सहर्ष अनुमति प्रदान की।

चैन्नई शहर में 2008 के पहले किसी भी मुनिसंघ का चातुर्मास व विहार नहीं हुआ था इसलिये मन में कुछ भय भी था। आचार्य श्री की तप-साधना इतनी है कि सब कुछ अच्छी तरह से अपने आप होता चला गया, और हुआ यह कि अगले 2 साल के दक्षिण प्रवास के दौरान किसी भी किस्म की अप्रिय घटना नहीं घटी और समाज में बहुत धर्म प्रभावना हुयी। उनके आगमन से चैन्नई शहर में त्याग, तपस्या व धर्म का सुगंधित समीर प्रवाहित होने लगा, लोगो में नई प्रेरणा व नये उल्लास का संचार हुआ। असाधारण व्यक्तित्व, कोमल, मधुर और ओजस्वी वाणी व प्रबल आध्यात्मिक शक्ति के कारण सभी लोग संघ की ओर आकृष्ट होते गये। आचार्य श्री का चेन्नई चार्तुमास हम चैन्नई वासियों के जीवन में बहुत बड़ा बदलाव लेकर आया। आचार्य श्री की प्रवचन शैली ऐसी है कि यदि कोई एक बार सुनने के लिए बैठ जॉय तो उठने की इच्छा नहीं होती, ऐसा ही हम चैन्नई वासियों के साथ होता था। चैन्नई का हर श्रावक 8-30 बजे से 10 बजे तक आचार्य श्री के प्रवचन सुनने के लिए लालायित रहता था।

आचार्य श्री ने तामिलनाडु के प्रवास के दौरान करीब 135 मंदिरों के दर्शन किये और करीब 20 प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाकर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करवाई। आचार्य श्री की प्रेरणा से आजतक करीब 75-80 मंदिरों के जीर्णोद्धार का कार्य पूरा हो चुका है। आचार्य श्री जैसे तपोनिष्ठ व दृढसंयमी है वैसे ही उनके शिष्य भा, अपने गुरु के पदचिन्हों पर चलते हुये मुनि श्री 108 अमरकीर्तिजी महाराज एवं मुनि श्री 108 अमोघकीर्तिजी महाराज ने भी श्री प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार का बीड़ा उठाया है और उसी श्रृखंला में तामिलनाडू में 4 प्राचीन मंदिरों का पूर्ण जीर्णोद्धार करवाया। आचार्य श्री के हस्तकमलों से आज तक 50 से भी ज्यादा पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं सम्पन्न हो चुकी हैं। तथा इन्होंने 75 से भी ज्यादा दीक्षायें प्रदान की हैं।

गुरुवर का सपना था कि एक क्षेत्र का निर्माण हो जिसमें विशाल समवशरण, पंचपरमेष्ठी की प्रतिमाऐं, शिक्षा संस्थान व औषधालय आदि हों। यह सपना णमोकार तीर्थ के नाम से साकार हो रहा है। जिसका निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है।

आचार्य श्री की 54 वीं जन्मजयंती पर चैन्नई वासियों का शत् शत् नमन:- अरिहंत भगवान से यही प्रार्थना करते है कि गुरुदेव दीर्घायु हों और उनके रत्नत्रय में दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि हो।

सही कहा है किसी ने:- जिसके जीवन में गुरु नहीं, उसका जीवन शुरु नहीं।

WORSHIPPING THE FEET OF THE GURU IS THE ULTIMATE OF ALL WORSHIPS

दिनेश सेठी, चेन्नई
मंत्री, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
तमिलनाडू, केरल, आन्ध्रप्रदेश एवं पाण्डिचेरी अंचल

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के.जैन चैन्नई, के नेतृत्व मे एक प्रतिनिधी मंडल मा. भाई अमितजी शाह, राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी, से उनके कार्यालय दिल्ली मे मुलाकात की। श्रवणबेलगोला के प.पू. स्वस्ति श्री जगत गुरू कर्मयोगी श्री चारूकीर्ती भट्टारक महास्वामीजी जिनके नेतृत्व एवं मार्गदर्शन मे महामस्तकाभिषेक २०१८ का आयोजन होने जा रहा है। इस गरिमामय महोत्सव मे पधारेने हेतु निवेदन के साथ उन्हे आमंत्रण दिया गया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। साथ ही साथ तीर्थक्षेत्रों के सम्बंधित कुछ समस्यायें हैं जिनका निराकरण करने के लिये निवेदन किया गया। इस प्रतिनिधि मंडल में भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के

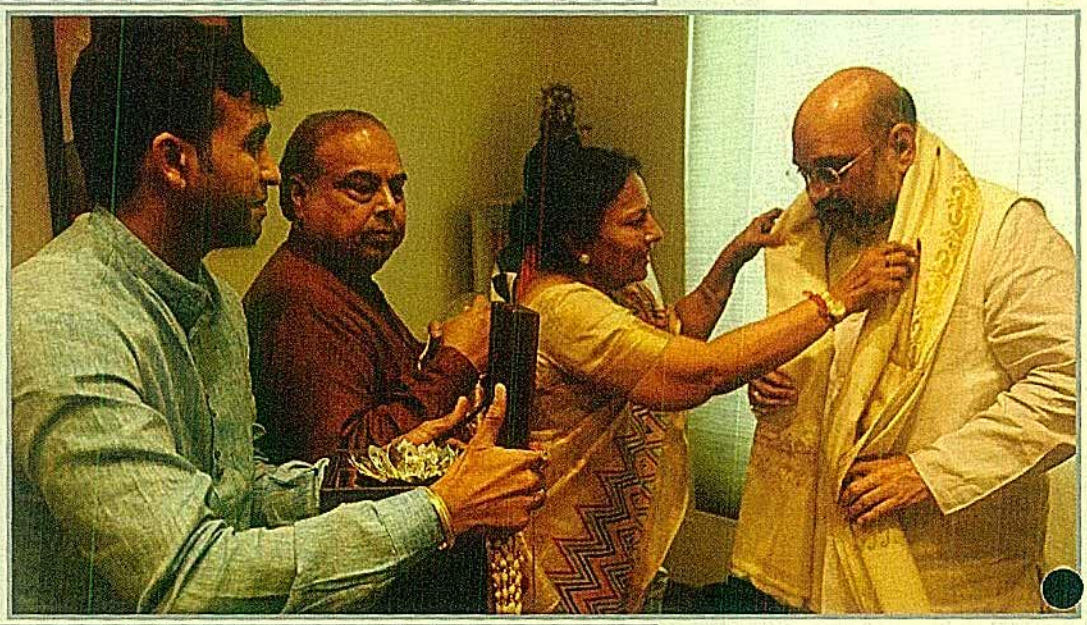

राष्ट्रीय महामंत्री संतोष जैन, श्री भूषण कासलीवाल, नगराध्यक्ष, चांदवड, डॉ. अतुल जैन नाशिक, श्री राजेन्द्र लोहिया, स्वप्निल जैन आदि महानुभाव सम्मिलित थे।

श्री अमित शाह जी को माल्यार्पण करती सरिता एम.के.जैन चैन्नई,

श्री अमित शाह जी को माल्यार्पण करते श्री संतोष जैन पेंढारी, नागपुर

श्री अमित शाह जी को शाल ओढ़ाती सरिता एम.के.जैन चैन्नई तथा पार्श्व में श्री कैलाश विजय वर्गीय

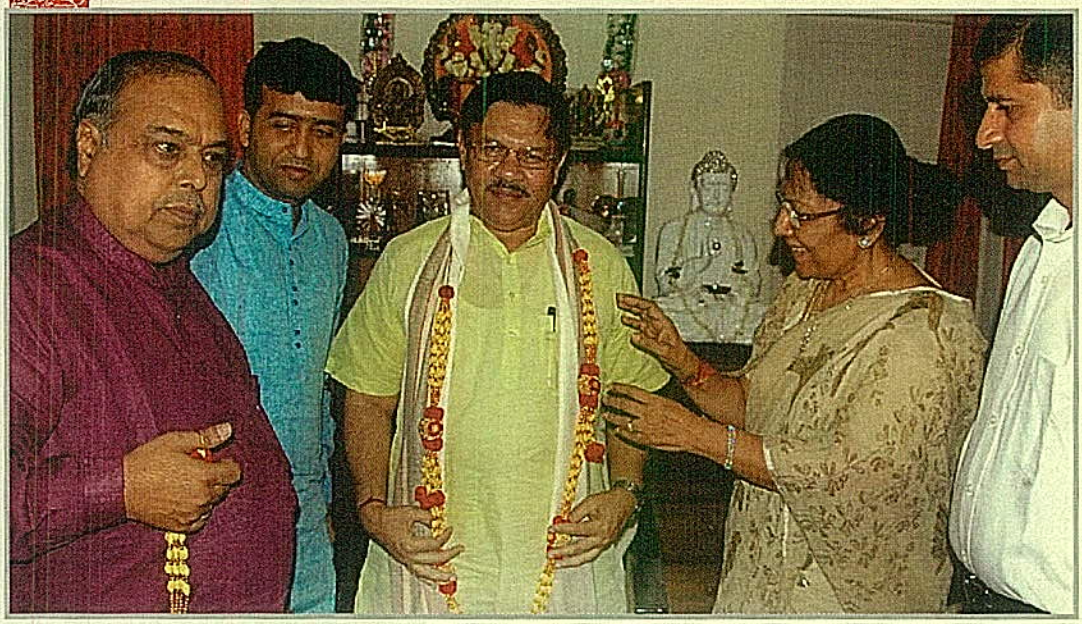

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिती की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के.जैन चैन्नई, के नेतृत्व मे एक प्रतिनिधि मंडल मा. श्री शाम जाजू राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी, से उनके कार्यालय दिल्ली मे मुलाकात की। श्रवणबेलगोला के प.पू. स्वस्ति श्री जगत गुरु कर्मयोगी श्री चारुकीर्ती भट्टारक महास्वामीजी जिनके नेतृत्व एवं मार्गदर्शन मे महामस्तकाभिषेक २०१८ का आयोजन होने जा रहा है। इस गरिमामय महोत्सव मे पधारने हेतु निवेदन के साथ उन्हे आमंत्रण दिया गया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। साथ ही साथ तीर्थक्षेत्रों से सम्बंधित कुछ समस्यायें है जिनका निराकरण करने के लिये निवेदन किया गया। इस प्रतिनिधि मंडल में भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के

राष्ट्रीय महामंत्री संतोष जैन, श्री भूषण कासलीवाल, नगराध्यक्ष, चांदवड, डॉ. अतुल जैन नाशिक, श्री राजेन्द्र लोहिया, स्वप्निल जैन आदि महानुभाव सम्मिलित थे।

पर्यूषण पर्व का ध्येय : विकृति का विनाश और विशुद्धि का विकास

–डा. सुनील 'संचय', ललितपुर

पर्यूषण यानि दसलक्षण पर्व का जैनधर्म में बहुत ही महत्व है। यह पर्व हमारे जीवन को परिवर्तन में कारण बन सकता है। यह ऐसा पर्व है जो हमारी आत्मा की कालिमा को धोने का काम करता है।पर्यूषण पर्व आत्मावलोकन का पर्व है, अपनी आत्मा में रमण करने का पर्व है, जाग्रत होने का समय है। विकृति का विनाश और विशुद्धि का विकास इस पर्व का ध्येय है। यह पर्व हमारी उदास टूटी हुई जिन्दगी को उत्सव से जोड़कर चला जाता है। यह पर्व आत्मालोचन, आत्मनिरीक्षण, आत्मजागृति एवं आत्मोपलब्धि का महान् महापर्व है। यह महापर्व राग का नहीं त्याग, संयम, साधना और आत्म जागरण का महापर्व है।

जैनधर्म में पर्यूशण पर्व का सर्वाधिक महत्व है। जैन परम्परा के अनुसार यह पर्व भादों, माघ और चैत्र के महीने में शुक्ल पक्ष की पंचमी से लेकर चतुर्दशी तक वर्श में तीन बार आता है। आता तो बर्श में तीन बार है किन्तु बड़े उत्साह से विशालरूप में मनाने की परम्परा सिर्फ भाद्रपद के महीने की ही है। जैनधर्म के दिगम्बर, श्वेताम्बर दोनों सम्प्रदायों में इस पर्व को मनाने की परम्परा है। विशेष यह है कि श्वेताम्बर समाज भाद्रपद कृष्णा त्रयोदशी से भाद्रपद शुक्ला पंचमी तक सिर्फ 8 दिन का मनाते हैं। जबकि दिगम्बर समाज में 10 दिन का प्रचलन है। यह एक मात्र आत्मशुद्धि और आत्म जागरण का पर्व है।

इस पर्व में आत्मा के दस गुणों की आराधना की जाती है। इनका सीधा सम्बंध आत्मा के कोमल परिणामों से है। इस पर्व का वैशिष्ट्य है कि इसका सम्बन्ध किसी व्यक्ति विशेश से न होकर आत्मा के गुणों से है। इन गुणों में से एक गुण की भी परिपूर्णता हो जाय तो मोक्ष तत्व की उपलब्धि होने में किंचित् भी संदेह नहीं रह जाता है।

दस दिन तक मनाये जाने वाले पर्यूषण (दशलक्षण) पर्व के प्रत्येक अंग का संक्षिप्त वर्णन :

1. उत्तम क्षमा : क्रोध का कारण उपस्थित होने पर भी क्रोध न करना क्षमा है। समर्थ रहने पर भी क्रोधात्पादक निंदा, अपमान, गाली–गलौज आदि प्रतिकूल व्यवहार होने पर मन में कलुशता न आने देना उत्तम क्षमा धर्म है।

2. उत्तम मार्दव : आधि, व्याधि से दूर समाधि की यात्रा करने का दिन। चित्त में मृदुता और व्यवहार में विनम्रता ही मार्दव है। यह मान कषाय के अभाव में प्रकट होता है। जाति, कुल, रूप, ज्ञान, तप, वैभव, प्रभुत्व, ऐश्वर्य सम्बन्धी अभिमान मद कहलाता है। इन्हें विनश्वर समझकर मानकशाय को जीतना उत्तम मार्दव धर्म कहलाता है।

3. उत्तम आर्जव : आर्जव का अर्थ है ऋजुता सरलता होता है। मन में कुछ, वचन में कुछ, प्रकट में कुछ प्रवृत्ति ही मायाचारी है। इस माया कषाय को जीतकर मन, वचन और काय की क्रिया में एकरूपता लाना उत्तम आर्जव धर्म है।

4. उत्तम शौच : शौच का अर्थ है –पवित्रता। अतः अपने हद्रय में मद क्रोधादिक बढ़ाने वाली जितनी भी दुर्भावनायें हैं, उनमें सबसे प्रबल लोभ कषाय है। इस लोभ पर विजय पाना ही उत्तम शौच धर्म है। संतोश धारण का दिन है शौच धर्म।

5. उत्तम सत्य : दूसरों के मन को संताप उत्पन्न करने वाले निष्ठुर, कर्कश और कठोर वचनों का त्याग कर सबसे हितकारी और प्रियवचन बोलना उत्तम सत्य धर्म है।

6. उत्तम संयम : संयम का अर्थ है– जो जग का यम है, संसार को मारने के लिए यमराज है, बस वहीं संयम है।आत्म नियंत्रण। पांचों इन्द्रिय एवं मन की प्रवृत्तियों पर अंकुश रखकर उनकी अनर्गल प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखना और शट्काय के जीवों की विराधना न करना, उत्तम संयम धर्म है।

7. उत्तम तप : इच्छाओं के निरोध को तप कहते हैं। विषय कषायों का निग्रह करके बारह प्रकार के तपों में चित्त लगाना, उत्तम तप धर्म है। तप धर्म का मुख्य उद्देश्य चित्त की मलिन वृत्तियों का उन्मूलन है।

8. उत्तम त्याग : यह जीवन का सौंदर्य है, वस्तु के प्रति आसक्ति का भाव मिटाने का नाम है त्याग। परिग्रह की निवृत्ति को त्याग कहते हैं। बिना किसी प्रत्युपकार की अपेक्षा के अपने पास होने वाली धनादि सम्पदा को दूसरों के हित व कल्याण के लिए लगाना उत्तम त्याग धर्म है।

9. उत्तम आकिंचन्य : ममत्व के परित्याग को आकिंचन्य कहते हैं। आकिंचन्य का अर्थ होता है कि मेरा कुछ भी नहीं है। अपने उपकरणों एवं शरीर से भी निर्ममत्व होना ही उत्तम आकिंचन्य धर्म है। क्योंकि कई बार सबका त्याग करने के बाद उस त्याग के प्रति ममत्व हो सकता है। आकिंचन्य धर्म में उस त्याग के प्रति होने वाले ममत्व का भी त्याग कराया जाता है।

10. उत्तम ब्रह्मचर्य : आत्मा में रमण करना ब्रह्मचर्य है। रागोत्पादक साधनों के होने पर भी उन सबसे विरक्त होकर आत्मोन्मुखी बने रहना, उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म है।

ये दस धर्म हमें सभी से क्षमा कराकर आत्मा में रमने की

शिक्षा देते हैं। बिना क्षमाभाव के आत्मा को पाना, मुक्ति को पान असम्भव है। ये दस धर्म परमात्मा के द्वार तक पहुंचाने के लिए सीढ़ी के समान है।

दसलक्षण धर्म (पर्यूषण पर्व) के फल के बारे में आचार्य कार्तिकेय स्वामी ने लिखा है–

एदे दहप्पयारा पाव कम्मस्स णासिया भणिया।
पुण्णस्स संजणाया पर पुण्णत्थं ण कायव्वा।।

यह धर्म के दसभेद पाप कर्म को नाश करने वाले और पुण्य का प्रार्दभाव करने वाले हैं। इसे इस रूप में भी कहा जा सकता है कि यह धर्म पुण्य के पालक और पाप के प्रक्षालक हैं।

पर्यूषण पर्व आत्मावलोकन का पर्व है, अपनी आत्मा में रमण करने का पर्व है, जाग्रत होने का समय है। विकृति का विनाश और विशुद्धि का विकास इस पर्व का ध्येय है। यह पर्व हमारी उदास टूटी हुई जिन्दगी को उत्सव से जोड़कर चला जाता है। यह पर्व आत्मालोचन, आत्मनिरीक्षण, आत्मजागृति एवं आत्मोपलब्धि का महान् महापर्व है।

देवगढ़ रोड, स्टेशन के पास, ललितपुर–284403
मोबाइल 9793821108

आर्यिका ससंघ का जैनगिरी जटवाड़ा में आगमन

देवेन्द्र क

संकटहर पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र जैनगिरि जटवाड़ा में आचार्य वसुनंदजी महाराज की परम शिष्या गणिनी आर्यिका गुरुनंदनी माताजी ससंघ का चातुर्मास हेतु गुरु पूर्णिमा के शुभ मुहूर्त पर आगमन हुआ। आर्यिका संघ में आर्यिका 105 ब्रह्मनंदनी माताजी, श्रीनंदनी माताजी, पदमनंदनी माताजी, प्रबोधननंदनी माताजी, प्रकाम्यनंदनी माताजी, देवनंदनी माताजी, प्रभानंदनी माताजी संघ का समावेश हैं।

आज सुबह क्षेत्र पर विराजित गणिनी आर्यिका कुशलवाणी माताजी व गुरुनंदनी माताजी का गुरु मिलन हुआ। इसके पश्चात गुरु पूर्णिमा के निमित्त भगवान संकटहर पार्श्वनाथ का पंचामृत अभिषेक किया गया। इस अवसर पर शांति मंत्र का वाचन आर्यिका माताजी ने किया। शांति मंत्र का सम्मान शुभम वृषभ जैन इंदौर को मिला। आर्यिका ने गुरु पूर्णिमा के निमित्त अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि जिसके जीवन में गुरु नहीं होता उसका जीवन सरल नहीं होता। गुरु अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता हैं। बचपन में यही अर्थ होता है कि मां ही गुरु है। हमारे सामने जो भगवान है, उसे हम जानते नहीं, भगवान की पहचान गुरु ही करवा सकता है। इसका मतलब कि भगवान जैसे ही गुरु श्रेष्ठ हैं। कार्यक्रम का मंच संचालन क्षेत्र के महामंत्री देवेन्द्र काला ने किया। इस अवसर पर क्षेत्र के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र साहूजी, महामंत्री श्री देवेन्द्र काला, कोषाध्यक्ष श्री प्रकाश कासलीवाल, महावीर सावजी, श्री रमण गंगवाल, श्री कमल कासलीवाल, श्री अशोक गंगवाल, श्री दिलीप पांडे, श्री रमेश अजमेरा के साथ समाज बंधु बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
स्व. दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

मानव जगत में अदभुत क्रान्ति पैदा करता है पर्युषण

ध्रुवकुमार जैन

आत्म जागरण आत्म चिन्तन एवं आत्मदर्शन का पावन पर्व पर्युषण दश-धर्म रूपी, रथ पर सवार होकर हम सब में संयम, साधना एवं आराधना का बीज अंकुरित करने, क्रोध-मान-माया-लोभ आदि विकारों से प्रदूषित आत्मा को स्वतंत्र करने और मानव में आत्म चेतना जागृत कर उन्हें मुक्ति-पथ की ओर अग्रसर करने 26 अगस्त 2017 को पुन: मंगल आगमन कर रहा है जिसका सर्वत्र स्वागत भी होगा।

पर्युषण जैन धर्म का महापर्व है। पूरे विश्व में इससे पवित्र अन्य कोई पर्व नहीं, जो मानव को उसके स्वरूप का दर्शन करा सके। अनन्त काल से आत्मा मिथ्यात्व मोह और अज्ञानता में रमता आ रहा है। वह अपने स्वभाव को भूलकर विभाव को ही मित्र स्वरूप मानता आ रहा है, जिसके कारण वह अपने दु:ख, क्लेश और पीड़ाओं का अन्त नहीं कर सका और न ही कर पायेगा, जब तक उसे अध्यात्म में रमने की कला नहीं आ जाती।

पर्युषण एक शाश्वत पर्व है। इसका कोई आरम्भ नहीं है। आगम के अनुसार इस पर्व का आरम्भ दिन, सृष्टि का आदि दिन है। काल चक्र के परिवर्तन में कुछ उतार-चढ़ाव आते हैं, जिन्हें जैन भाषा में अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी के नाम से जाना जाता है। अवसर्पिणी में क्रमश: ह्रास और उत्सर्पिणी में क्रमश: विकास होता है। प्रत्येक अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी में छ:-छ: काल होते हैं।

छठे काल के अन्त में भरत और ऐरावत क्षेत्र के आर्य खंड में प्रलय होता है। छठे काल के अन्त में एक पवन पर्वत-वृक्ष-पृथ्वी आदि को चूर्ण कर समस्त दिशा और क्षेत्र में भ्रमण करता है। इस पवन के कारण सारे जीव मूर्छित हो जाते हैं। देवों द्वारा रक्षित 7 युगल तथा अन्य कुछ जीवों के अतिरिक्त समस्त प्राणियों का संहार हो जाता है। इस काल के अन्त में 49 दिनों तक पवन अत्यन्त शीत, क्षार रस, विष, कठोर अग्नि, धूल और धुओं की वर्षा एक-एक सप्ताह होती है। इसके बाद उत्सर्पिणी काल का प्रवेश होता है और नवीन युग का आरम्भ होता है यह प्रलय और सृजन की प्रतिक्रिया थी।

छठे काल का अन्त आषाढ़ी पूर्णिमा को और नवीन युग का आरम्भ श्रावण कृष्णा प्रतिपदा को अभिजित नक्षत्र में होता है। अत: आषाढी पूर्णिमा के बाद श्रावणी प्रतिपदा से 59 दिवस भाद्र शुक्ला चतुर्थी है। इस तरह से भाद्रपद शुक्ल पंचमी उत्सर्पिणी और अवर्सीपणी के आरंभ का दिन हो जाता है। इस निमित्त से सृष्टि के आदि का दिन भाद्रपद शुक्ल पंचमी हो गयी और इसी दिन की स्मृति में इस पावन पर्व का आरम्भ हुआ। इसी से यह प्रतीत होता है कि यह पर्व शाश्वत, और अनादि निधन पर्व है।

पर्युषण का दूसरा नाम दशलक्षण धर्म भी है। 1) उत्तम क्षमा, 2) उत्तम मार्दव, 3) उत्तम आर्जव, 4) उत्तम सत्य, 5) उत्तम शौच, 6) उत्तम संयम, 7) उत्तम तप, 8) उत्तम त्याग 9) उत्तम आकिंचन्य, 10) उत्तम ब्रह्मचर्य ये दश धर्म नहीं बल्कि धर्म के दश-लक्षण है, जिन्हें संक्षेप में दश धर्म शब्दों से अभिहित कर दिया गया है। जिस आत्मा में आत्म रुचि, आत्मज्ञान और आत्मलीनता का रूप प्रकट होता है, उसमें धर्म के ये दश-लक्षण स्वत: ही प्रकट हो जाते हैं। वैसे तो प्रत्येक धार्मिक पर्व का प्रयोजन आत्मा में वीतराग भाव की वृद्धि करना है किन्तु, इस पर्व का सम्बन्ध विशेष रुप से आत्मगुणों की आराधना से है।

पर्युषण मानव जगत में एक अद्भुत क्रान्ति पैदा करता है। इस पर्व का आगमन समस्त मानव जगत में आत्म कल्याण हेतु चिन्तन का भाव पैदा करना है, यह चिन्तन ही उसे सत्कर्म की ओर धकेलती है और उस ओर कदम बढ़ाना ही खुद के पथ को प्रकाशित करना है, जो इस पर्व के आगमन की एक सच्ची अनुभूति है। आज का युग भौतिक वाद का युग है। आधुनिकता की होड़ में अग्रणी रहने के लिए यद्यपि वह जीका रुपी निधि को कचरे के डिब्बे में फेंकता जा रहा है, त्याग से विमुख होकर भूखे भेड़िये की तरह भोग की ओर लपक रहा है, और इसी की छत्रछाया में दूसरे के, घावों पर खड़ा होकर सुख ढूंढ रहा है, फिर भी पर्युषण की भनक पड़ते ही वह चाहे दस दिनों के लिए ही सही, आचरण की शुद्धता पर चिन्तन करना आरम्भ कर देता है। उसे मालुम है कि हिमालय की तरह अटल और अभेद्य पर्युषण के दस धर्म अपनी शिक्षाओं से हमें आकृष्ट अवश्य कर लेंगे।

ऐसा चिन्तन कराने के लिए पर्वराज की सेना भी सक्षम है, जो भूले-भटके पथिकों को कल्याण के मार्ग पर है हमारे परम पूज्य आचार्य, मुनि साधु आर्यिका आदि जा पर्युषण के आगमन के पूर्व ही तमाम भौतिक जगत में फंसे हुए लोगों को त्याग की शिक्षा देकर धर्म की अलख जगाये हुए है।

आइये दस दिनों तक चलने वाले इस विशाल पर्युषण मेले में आत्म कल्याण का कुछ सामान खरीदें। इस मेले में खान-पान, आमोद-प्रमोद का सामान नहीं है, बल्कि यहाँ आत्मा-जगरण, आत्म-शोधन और आत्मिक-उजाले का सामान बिक रहा है। उत्तम क्षमादि दस धर्म की विशाल दुकानें सजी हुई है। ग्राहकों की इच्छा उन चमकती, जगमगाती और आकर्षक लगती दुकानों तक पहुंचने की है, वे वहाँ पहुँचना और कुछ न कुछ खरीदना भी चाहते है परन्तु मेले में घूम रहे ठगों-चोरों के कारण वहाँ तक पहुँचने से डर रहे हैं। ये चोर के कारण वहाँ तक पहुँचने से डर रहे हैं। ये चोर है- काम, क्रोध, मद, लोभ। पर्युषण मेले में जगह-जगह मजमा भी लगा हुआ है जहाँ कुछ व्रती-पुण्यात्मा अपने-अपने तरीकों से उन दुकानो तक पहुँचने का मार्ग बतला रहे है। जगह-जगह मेले में एलाउन्स भी हो रहा है कि यदि कोई ठग मेले में दिखाई दे तो उसे पर्युषण सुरक्षा चौकी में पहुँचाने का कष्ट करें, फिर क्यों हम पीछे हैं।

आइये हम सब मिलकर पर्वराज पर्युषण के पवित्र एवं मांगलिक, आगमन का स्वागत करें, उसकी शिक्षाओं को ग्रहण करें, दर्शन-पूजन-व्रत शुद्ध भावों से करके खुद का कल्याण करें, देशधर्मों का क्रम से पालन करें, मन में कलुषिता न रहने दें। यदि हम ऐसा कर गये तो पर्युषण का आना सुखद होगा। मानव जगत में अदभुतद क्रान्ति पैदा करने वाले इस शाश्वत पर्व के शुभागमन को यादगार बनाने के लिए हम अपने-अपने घरों में एक दीपक जलाये और छतों पर पंचरंगा ध्वज फहरायें, जिससे हमारा पर्व विशालता को प्राप्त हो सके।

जय जिनेन्द्र

प्रतिभावान जैन युवा सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली के महामस्तकाभिषेक २०१८ के पावन प्रसंग पर स्वस्तिश्री भट्टारक चारूकीर्ति महास्वामीजी की पावन प्रेरणा से आयोजित होने वाले राष्ट्रीय जैन युवा सम्मेलन (२८-२९ अक्टूबर २०१७) के अवसर पर निम्नांकित क्षेत्रों में जैन समाज की उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित करने का निर्णय किया गया है।

सम्मान के क्षेत्र निम्नवत् होंगे - ०१. तीर्थ विकास एवं प्रबंधन, ०२. पुरातत्व संरक्षण, ०३. पांडुलिपि सर्वेक्षण एवं संरक्षण, ०४. साहित्य सृजन एवं लेखन, ०५. संगीत/ नृत्य, गायन एवं वादन, ०६. विदेशों में मूल परम्परा का प्रचार, ०७. वैज्ञानिक आविष्कार, ०८. कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर विकास, ०९. खेलकूद (Indoor & Outdoor), १०. इतिहास लेखन एवं अनुसंधान, ११. शिक्षा के प्रचार, १२. चिकित्सा सेवा, १३. स्वरोजगार - उद्योग, १४. प्रशासनिक / न्यायिक सेवा, १५. राजनीति, १६. शाकाहार एवं जैन जीवनशैली का प्रचार, १७. अध्यापन / श्रेष्ठ शिक्षक, १८. मुनि सेवा / साधुचर्या में सहयोग दिनांक १६ अगस्त २०१७ तक प्राप्त प्रस्तावों का मूल्यांकन एक त्रिसदस्यीय निर्णायक मण्डल द्वारा किया जाकर ३१ अगस्त २०१७ तक चयनित प्रतिभाओं के नाम की घोषणा कर दी जायेगी। स्वयं के अतिरिक्त ४५ वर्ष से कम आयु के दिगम्बर जैन युवा का प्रस्ताव समाज के किसी भी संगठन के पदाधिकारी सम्पूर्ण विवरण सहित प्रेषित कर सकते हैं। सम्मान के क्षेत्र आवश्यकतानुसार समिति द्वारा परिवर्तित किये जा सकते हैं।

प्रस्ताव पत्र में निम्न विवरण आवश्यक हैं :-

०१. प्रस्तावित प्रतिभा का क्षेत्र, ०२. प्रस्तावित व्यक्ति का नाम, ०३. पत्राचार का पूर्ण पता, ०४. फोन नम्बर, ०५. मोबाइल नम्बर, ०६. ई-मेल, ०७. जन्म तिथि, ०८. वर्तमान पद एवं सम्बद्ध संस्था / फर्म (यदि हो), ०९. व्यक्ति की उपलब्धियों का सम्पूर्ण विवरण (सप्रमाण), १०. जैन युवा प्रतिभा के रूप में सम्मानित किये जाने का औचित्य (अधिकतम १ पृष्ठ), ११. प्रस्तावक का नाम, पद, संस्था, हस्ताक्षर एवं दिनांक । सभी दृष्टियों से पूर्ण प्रस्ताव संलग्नकों सहित निम्न पते पर इस प्रकार भेजे जाने चाहिये कि वे १६.०८.२०१७ तक प्राप्त हो जाये। **राष्ट्रीय जैन युवा सम्मेलन उपसमिति, महावीर ट्रस्ट कार्यालय, ६३ महात्मा गाँधी मार्ग, कीर्ति स्तम्भ, रीगल चौराहा, इन्दौर - ४५२००१ (म.प्र.)**

प्रदीपकुमारसिंह कासलीवाल	हसमुख जैन गाँधी	डॉ. अनुपम जैन
अध्यक्ष	मुख्य संयोजक	निदेशक
युवा सम्मेलन उपसमिति	युवा सम्मेलन उपसमिति	जैन युवा सम्मान
98930 30218	*93021 03513*	*94250 53822*
pradeepkasliwal@hotmail.com	hansmukhjaingandhi@gmail.com	anupamjain3@rediffmail.com

अनुपमा जैन
न्यूज डेस्क प्रभारी मंगल कलश बुलेटिन
गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक

हसमुख गांधी गोम्मटेश्वर महामस्तकाभिषेक के संरक्षक

इन्दौर । जैन जगत के वरिष्ठ समाजसेवी व दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हसमुख जैन गांधी को गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति का संरक्षक मनोनित किया है । उनकी नियुक्ति फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष होने के नाते की गई है । दि.जैन समाज की सभी राष्ट्रीय संस्थाओं के अध्यक्षों को महोत्सव समिति का संरक्षक बनाया गया । श्री गांधी का मनोनयन पूज्य कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्तिजी भट्टारक स्वामी व राष्ट्रीय समिति की सहमति से राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता एम.के.जैन (चेन्नई) ने किया । उल्लेखनीय है कि श्री गांधी को 2006 के महामस्तकाभिषेक में जैन युवा रत्न से सम्मानित किया गया था । वर्तमान में वे अ.भा.राष्ट्रीय युवा सम्मेलन के मुख्य संयोजक व कलश आवंटन समिति के सहसंयोजक का दायित्व भी श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिषेक हेतु निर्वहन कर रहे है । मनोनयन पर फेडरेशन सहित अनेक स्नेहीजनों ने उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं दी ।

– राजेन्द्र जैन महावीर
राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी

कलशों में भरा हुआ है बाहुबलि दर्शन

डा० ममता जैन

सृष्टि की जब जब नई कोंपले फूटी , आलोक का नई आभा छिटकी तभी प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के द्वारा बताए मार्ग पर उनके पुत्र पुत्रियां भी चले और समाज के लिए आदर्श बने .भगवान बाहुबलि उन्ही के यशस्वी पुत्र थे श्रवणबेलगोला की इस पावन धरा पर उनकी प्रतिमा ने विश्व का आश्चर्य बनकर श्रमण संस्कृति के रूप स्वरूप को विश्व को समझाया यह तपस्या भूमि है, यह साधना भूमि है यहां भक्ति में सरलता चलती है,आस्था चलती है कामदेव ,अप्रतिम योद्धा , भगवान बाहुबलि का व्यक्तित्व मात्र पौराणिक व्यक्तित्व नही है अपितु युगों युगों केबाद भी उनके जीवन दर्शन सम्पूर्ण आर्यावर्त में मानों कर्म का साक्षात कल्पवृक्ष ही है जिसकी छत्र छाया में श्रमणत्व एवं श्रावकत्व दोनों को नये नये वरदानों को प्राप्त करने का अमृत फल प्राप्त हुआ भगवान बाहुबलि ने एक नयादृष्टिकोण विकसित किया, उन्होंने अपने भाई का मान मर्दन ही नही किया अपितु सारे विश्व को एक सन्देश दिया कि धन के व्यूह चक्र में फसा राज अपनी शक्तिकेबल पर किसी को क्षत विक्षत धराशायी करने को तत्पर रहता है ऐसे सत्तान्ध को सबक सिखाना ही चाहिए, इसीलिए उन्होने सामान्य से सामान्य जन जीवन को प्रभुता के सम्मुख लघुता की मानसिकता से मुक्त किया अभिमान और विजयोन्मत्तता की जमी हुई मोटी तह कोउन्होने अपने दृढ हिमालयी व्यक्तित्व के कर्म जल से धो डाला , धन बल को नकार कर , उन्होंने भाई को सोचने को विवश किया किजो अपने भाई को ही स्वाधीन नही रहने देना चाहता वह भला कैसे किसी की अस्मिता की रक्षा करेगा ऐसा राजा प्रजा का सेवकनही हो सकता .इसलिए अपनी प्रिय प्रजा के लिए उन्होंने अपने चक्रधारी भाई को भी न केवल ललकारा अपितु उसे आकाश से धरातल पर पटकदिया। साथ ही बता दिया जिस राजा को परिवार पर भी बल प्रयोग करते संकोच नही होता उस राजा को सबक सिखाना चाहिए ..

युद्ध में विजयी रहने के पश्चात तक्षशिला नरेश बाहुबलि ने यह भी बताया किवे शासन व्यामोही नही है न ही उनका उददेश्य कोई विजेता बनकर अपना प्रभुत्व बढाना है इसीलिए तत्काल उनका मन्तव्य भी सबको स्पष्ट हो गया जब उन्होंने अपने जीवन को कर्ममयी दीक्षा में ढाला, तपाया का नया प्रयास रूप प्रतिष्ठित किया, उन्होंने पविार केइस युद्ध मे किसी एक भीप्रजाजन को ाहत नही होने दिया आज की परिवारवादी राजनेताओं के लिए उनका जीवन संदेश उदाहरण है .अपने बाहु बल को ही आधार बना कर कहा : जिसकेपास हाथ है वे क्या नही कर सकते। "अहो सिद्धार्थता तेषां सन्तीह पाणयः" और मल्ल युद्ध जीत कर बाहुबलि जी ने मोह मल्ल को जीतने केलिए एकक्षण भी नही गवाया ..राजा और योगी दोनों ही रूपों में वे अद्वितीय रहे. तपस्या के लिए खडे हुए तो अन्तिम पल तकमोक्ष प्राप्ति तक बैठे ही नही , आहार लिया ही नही ..और चरणों में झुका दिया उन सबको धन ,प्रभुसत्ता ,अहन्न्यता ही जिनके लिए सब कुछ था .योग और भोग दोनो की पराकाष्ठा की सारी परिभाषाए संसार के सामने थी. प्रत्येक मानव ने मनुष्यता नया मेरूदण्ड प्रदान करके स्वार्थहीन कर्म के महाव्रत की रूपरेखा दी उनके त्यागमय जीवन की एक एक कली हमारे सामने खिली और जीवन की सच्चाई और नियमितता खुलकर चारों और फैल गई।

आज भारतीय मानव का मस्तिष्क एक परिवर्तन के युग से गुजर रहा है इस समय उसके लिए सबसे बडा उपदेश व सन्देश यही ही सकता है कि मनुष्य अपना मूल्य समझे राजसत्ता को उसका दायित्व एकव्यक्तिभी बता सकता है और सिंहासन हिला भी सकता है ,प्रजातन्त्र के लिए इससे बढकर प्राणमंत्र हो नही सकता जाति, धन अथवा जन्म केकारण कोई विशेषाधिकार का राज्य में स्थान नही होना चाहिए। बाहुबलि जी का भरत की आधीनता को नकारना के पृष्ठ में उनके परमपुरूषार्थ एवं उनके व्यक्तित्व के अनेक पहलू उजागर होते है।

भगवान बाहुबलि ने अपनी चेतना को महत्तर बनाकर सबको आत्मीय स्नेह के सूत्र से जोडा . आदिनाथ के युग में भी वे पहचान बने औरपिता से पूर्व मोक्ष केद्वार खोले आज भी तीर्थंकरों के समकक्ष स्थित उनकी ही प्रतिमा जिनालयों में एकदम पहचानी जाती है और पूजी जाती है। अपनी कामनाओं पर पैनी दृष्टि रखते हुए उन्होंने भीतर और बाहर को सतुंलित रखा। स्वयं को विराट बनाकर मानवता से जोडा। उनकी अहिंसा सही मायने में जैन आगम में वर्णित अहिंसा है। यह अहिंसा वीरता की प्रतीक है, यही अहिंसा बताती है कि अहिंसा कायरता नहीं है मानवता के इतिहास की अन्यतम उपलब्धि है। युद्ध और अहिसा दोनों केलिए ही उन्होंने एक राह बना दी आरै पृथ्वी को शीतलता दी। उन्होंने जिस चेतना को अपनाया उसी को जीवन के प्रयोग और खोज की जीवन्त गाथा के रूप में परिणति दी, महामस्तकाभिषेक का आयोजन एकसंकल्प है भगवान बाहुबलि की विशिष्टता का प्राकट्य भाव है , उनके विराट व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब है, जन जन मे उनकी प्रतिष्ठा का प्रमाण है, उन्हें अपने भीतर धारण करने का आह्वान है, .कलश और कलशों का जल हमें बहुत कुछ कहता है जल केवल कलशों की शोभा नही होता अपितु उसमें अपने भी निर्मलता, पारदर्शिता , स्वच्छता, शुद्धता के साथ जीवन को चलाने बचाने की भी अद्भुत क्षमता होती है इस पवित्र एवं सुगन्धित द्रव को अपने घट में भरकर जीवन आगंन में रख लिया तो हमारा जीवन भी बाहुबलिमय होगा बाहुबलि की उत्तुंग प्रतिमा हर युग में हर दृष्टिकोण से मनुष्य के मूलभूत प्रश्नों का उत्तर देती रहेगी और भगवान की दिव्य देशना एवं जीवन दर्शन को जन जन को समझाती रहेगी.

भगवान बाहुबली मूर्ति निर्माता -वीर चामुण्डाराय सत्य युधिष्ठिर कहलाते थे। श्रवणबेलगोला में विश्व प्रसिद्ध भगवान बाहुबली की विशाल एवं भव्य मूर्ति बनवाने वाले महापुरुष चामुण्डाराय गंगवंशी राजा राचमल्ल के मंत्री एवं प्रधान सेनापति थे। गंगवंश के राजाओं ने मैसूर व आस पास के प्रदेशों पर लगभग एक हजार वर्ष तक शासन किया तथा जैन धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ ही अनेक जैन मंदिरों का निर्माण भी कराया। उनका शासन काल कर्नाटक में जैन धर्म का स्वर्ण युग माना जाता था।

चामुण्डाराय गंगवंश के तीन राजाओं मारसिंह, राचमल्ल एवं उनके उत्तराधिकारी रक्कसगंग के मंत्री रहे। सेनापति के रूप में उन्होने गंग राज्य को २-४ बार नही बल्कि १८ बार युद्धों में विजय दिला कर अभूतपूर्व सेवा की। इसी कारण उन्हे समय-समय पर वीरमार्तण्ड, रणरंगसिंह, वैरिकुलकालदण्ड समरकेशरी तथा सुमटचूडामणि आदि अनेक गरिमापूर्ण उपाधियां प्रदान कर सम्मानित किया गया।

चामुण्डाराय आचार्य अजितसेन तथा आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती के शिष्य थे। उनके उपदेश सुनते थे और धर्म चर्चा करते थे। कहते हैं एक बार आचार्य नेमिचन्द्र प्राचीन ग्रंथ षटखंडागम का अध्ययन कर रहे थे तभी चामुण्डाराय आ गए तो आचार्य ने यह सोचकर ग्रंथ बंद करके रख दिया कि चामुण्डाराय की समझ में कुछ नही आएगा, चामुण्डाराय ने धर्मचर्चा की और उन्हे वह ग्रंथ पढाने का आग्रह किया तो आचार्य ने उनसे प्रभावित होकर सरल भाषा में एक ग्रंथ की ही रचना कर दी और उसका नाम उनके नाम पर ही गोम्मटसार रख दिया। चामुण्डाराय का एक नाम गोम्मट भी था, इसीलिए उनके द्वारा निर्मित बाहुबली की मूर्ति गोम्मटेश्वर यानि गोम्मट के ईश्वर भी कहलाई।

चामुण्डाराय ने धर्म ग्रंथों का भी गहन अध्ययन किया था। उन्होने गोम्मटसार की वीरमार्तण्डी , चरित्र सार और चामुण्डाराय पुराण आदि ग्रंथों की रचना कर कन्नड भाषा के साहित्य में भी अपना उच्च स्थान बनाया। उन्हे अनेक धार्मिक उपाधियों से भी विभूषित किया गया था। सदा सच बोलने के कारण उन्हे सत्य युधिष्ठिर कहा जाता था। धार्मिक गुणों के कारण वे सम्यक्त्वरत्नाकर तथा साधर्मी बंधुओं के लिए अण्णा यानि पिता के सम्मान थे।

चामुण्डाराय ने इस विशाल मूर्ति के अलावा कई अन्य मूतिर्यों, स्तंभों व मंदिरों का निर्माण भी कराया जिनमें नेमिनाथ मंदिर, त्यागद ब्रह्मदेव स्तंभ, अखंड बागिलु, गुल्लिकाय जी की मूर्ति आदि प्रमुख हैं।

केवल चामुण्डाराय ही नही, उसका पूरा परिवार ही अत्यंत धार्मिक था। उनकी माता कालल देवी और धर्मपत्नी अजिता देवी तो बाहुबली मूर्ति निर्माण से सक्रिय रूप से जुडी हुई थी ही उनकी छोटी बहन पुल्लबे ने भी कोयम्बटूर जिले के विजयमंगलम में चन्द्रनाथ मंदिर में संल्लेखना विधि द्वारा शरीर का त्याग किया था।उनके पुत्र जिनदेव ने भी

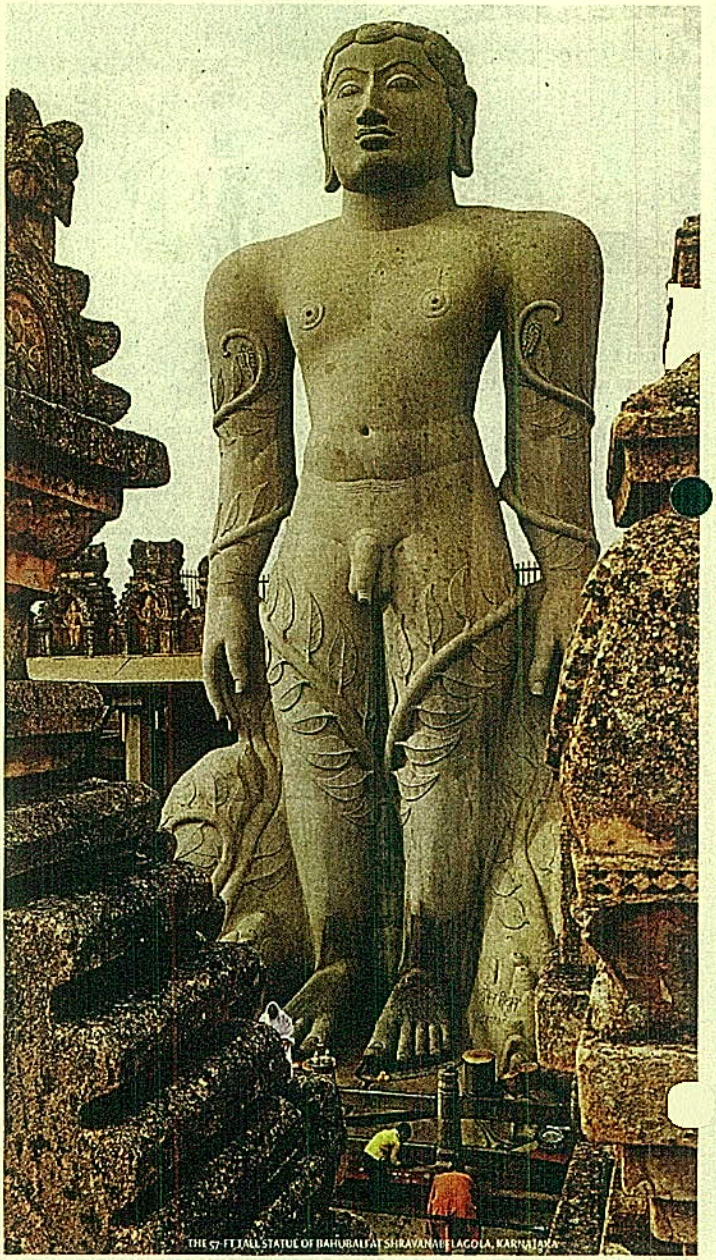

श्रवणबेलगोला की चामुण्डाराय बसदि की ऊपरी मंजिल बनवाकर उसमें तीर्थंकर नेमिनाथ की प्रतिमा स्थापित कराई थी।

इस प्रकार शस्त्र, शास्त्र और शिल्प के क्षेत्र में गगनचुंबी कीर्ति को प्राप्त कर सन ९९० में इस महान विद्वान, योद्धा ने संल्लेखना पूर्वक अपने शरीर का त्याग किया। उनका नाम चिरकाल तक इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। धर्म, संस्कृति और देशभक्ति की उस महान विभूति को शत-शत नमन। विशेषः पूज्य भट्टारक चारुकीर्ति स्वामी जी से मेरा निवेदन है कि यह महामस्तकाभिषेक चामुण्डाराय जी की स्मृति को ही क्यों न समर्पित कर दिया जाए।

-रमेश जैन, नवभारत टाइम्स, दिल्ली

पर्व के दस दिन युवा एवं तीर्थ

दशलक्षण या पर्यूषण पर्व के 10 दिन दिगम्बर जैन समाज के लिये बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसका कारण यह है कि सम्पूर्ण वर्ष में ये ही वे दिन हैं जब 99 दिगम्बर जैन भाई-बहन मन्दिरजी जाते हैं। शेष दिनों में मात्र-20-25 ही मन्दिर जाते हैं। सामाजिक संगठन की दृष्टि से यदि आप कोई संदेश देना चाहते हैं या अपनी बात सम्पूर्ण दिग. जैन समाज तक पहुँचाना चाहते हैं तो उसे मन्दिर के माध्यम से सरलता से पहुँचाया जा सकता है। अपने समाज की नई पीढी धर्मनिष्ठ बिल्कुल नहीं है, ऐसा सोचना गलत है। आचार्य श्री विद्यासागर जी के संघ की दिनचर्या में, आचार्य श्री पुष्पदन्त सागर जी के संघ एवं उनके प्रमुख शिष्यों मुनि श्री तरुण सागर जी मुनि श्री प्रज्ञा सागर जी एवं मुनि श्री पुलक सागर जी की आनन्द यात्राओं में आचार्य श्री ज्ञानसागर जी की आहार चर्या में, गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की स्वाध्याय कक्षाओं में देखने पर युवा वर्ग की बहुलता मिलती है। इनमें उपस्थित युवा शक्ति से चर्चा कर आप धर्म के प्रति उनके नजरिये से रूबरू हो सकते हैं। किन्तु प्रोफेशनल कालेजों में अध्ययनरत हमारी तरुणाई या प्लेसमेंट के लिये संघर्ष कर रहे हमारे युवाओं का बहुमत तस्वीर का दूसरा पहल बताते हैं।

आखिर क्यों? दूसरे वर्ग के युवाओं को धर्म का वास्तविक रुप बताने एवं उन्हें समाज की गतिविधियों से सकारात्मक रूप से जोड़ने का सशक्त माध्यम है- पर्यूषण पर्व, जिसे हम आमतीर पर दशलक्षण पर्व भी कहते हैं। इस अवसर पर अनेक मन्दिरों में अन्य दैनिक क्रियाओं के साथ सायंकाल प्रतिक्रमण के बाद आरती, फिर स्वाध्याय एवं उसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। ए सर्वेक्षण में यह बात सामने आई कि आरती का समय होते ही सम्पूर्ण युवा वर्ग मन्दिर में आ जाता है। वैष्णव मन्दिरों पर की तर्ज पर ढोल धमाके से जोरदार आरती होती हैं, भक्ति होती है, नृत्य भी होते हैं एवं उसके फौरन बाद सारे युवा मन्दिर से गायब हो जाते हैं, कुछ घर जाते हैं एवं कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम की तैयारी करते हैं। शेष बचे बालक मन्दिर प्रांगण में अपने दोस्तों के साथ कुछ भाग-दौड़ के खेल लेते हैं, क्योंकि 01 घंटे बाद उन्हें सांस्कृतिक कार्यक्रम देखना होता हैं।

क्या शास्त्र सभा पूर्णत: निरर्थक है? क्या उसमें चन्द बुजुर्गो, समाज के वरिष्ठ पदाधिकारियों एवं लोक लाज वश अपनी सासों के साथ बैठी बहुओं के अलावा शेष के मतलब का कुछ नहीं? क्या शास्त्र सभा में बताई जाने वाली ज्ञान की बातों को इतना सरल, सहज एवं बोधगम्य नहीं बनाया जा सकता कि शनै: शनै: युवा भी उसकी ओर आकर्षित हो? ज्ञान को जब तक जरुरत मंदों तक नहीं पहुँचाया जायें तब तक वह किस काम का?

हमारे आचार्यों ने भी समय एवं क्षेत्र की जरूरत के हिसाब सें प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत, कन्नड़, तमिल, ढुढारी, (राजस्थानी) भाषाओं में ग्रंथों का सृजन किया। जब याद रखने की जरुरत थी तब सूत्र रचे एवं जब समझाने की जरुरत महसूस हुई तब विस्तृत टीकायें लिखी। आज जरुरत इस बात की है जीवन के तनावों को दूर करने, स्वस्थ रहने एवं जीवन की प्रगति में धर्म की उपयोगिता एवं आवश्यकता को आज की शब्दावली में समझाया जाये। दीर्घकालीन सुख, शान्ति एवं समृद्धि में धार्मिक आचरण की उपयोगिता समझाई जाये तो युवा पीढी धर्म की ओर आकृष्ट होगी मैंने इसके प्रत्यक्ष प्रयोग किये हैं एवं सार्थक परिणाम भी पाये हैं। मैं यहाँ वर्तमान सन्दर्भ में धर्म एवं उसके दस लक्षणों की चर्चा कर रहा हूँ।

सर्व प्रथम हम देखेंगे कि धर्म क्या? शास्त्रीय परिभाषाओं की अपेक्षा यदि हम यह कहें कि वह काम जिससे परिवार, समाज एवं राष्ट्र को लाभ हो, खुशी मिले, स्वयं को एवं अपने इष्टमित्रों को सुख एवं शांति मिले, साथ ही किसी को भी कष्ट न हो वह धर्म हैं। क्रियाकाण्ड का नाम धर्म नहीं है कुछ काम जिन्हें धर्म का नाम दिया जा सकता है वे निम्नवन हैं:-

1- अपने सहपाठियों को जरूरत के हिसाब से पुस्तकें या नोट्स उपलब्ध कराना। यदि कोई विषय उन्हें समझ में न आये तो समझा देना।

2- अपने शिक्षकों तथा वरिष्ठ साथियों का सम्मान करना, उसके सहयोग हेतु कृतज्ञ रहना।

3- अपने मोहल्ले तथा कार्यस्थल के समीप रहने वाले जरुरतमंद लोगों को कपड़े, भोजन-दवायें एवं जरुरत की अन्य चीजें उपलब्ध कराना।

4- अपने प्रोफेशन में आने वाले नये लोगों को मार्गदर्शन देना, उनमें आत्म विश्वास बढाना और परेशानी के समय उनको सही दिशा देना।

ये तथा इस जैसे अन्य सैकड़ों काम हैं जो धर्म हैं। दुनियों का कोई धर्म इससे मना नहीं करता। इसके विपरीत कुछ बातें धर्म के बिल्कुल खिलाफ हैं जो किसी को नहीं करना चाहियें।

1- बिना किसी प्रयोजन सड़क के किनारे बैठे किसी भी जानवर, भिखारी अथवा पेड़-पौधे पर पत्थर मारना, डण्डे मारना अथवा उपहास करना।

2- राह चलते किसी भी व्यक्ति को गलत रास्ता बताना उसको परेशान करने की नियत से उलझाना। किसी गरीब का मजाक उड़ाना आदि।

3- अपने कार्यालयीन सहयोगी, व्यावसायिक प्रतिद्वंदी या सहपाठी की असफलताओं की खिल्ली उड़ाना, प्रसन्न होना।

4- मोहल्ले-पड़ोस में रहने वाले गरीब, निर्धन व्यक्तियों की मदद करने की बजाय उन पर मिथ्या आरोप लगाना अथवा उन्हें प्रताड़ित करना।

5-अपने साथियों से झूठ बोलना। उनकी मजबूरी का फायदा उठाना और उन्हें शारीरिक, मानसिक कष्ट पहुँचाना। स्वयं के धन, ज्ञान, जाति और कुल का अहंकार करना।

ये सब कृत्य किसी भी धर्म में अच्छे नहीं माने गये हैं। अर्थात् इनको करने (धारण करने) योग्य नहीं माना गया हैं। आशा है आप लोग धर्म और अधर्म का फर्क समझ गये होगें। अब मैं दश लक्षण पर्व के दिनों में जिन 10 धर्मों की चर्चा होती हैं उन पर विचार करूंगा। यहाँ मैं स्पष्ट कर दूं कि दशलक्षण पर्व में जीवन जीने की कला सिखाई जाती हैं जिसे Art of Living

॥ जिनवर निलयानां भवतोहिं स्मरामि ॥

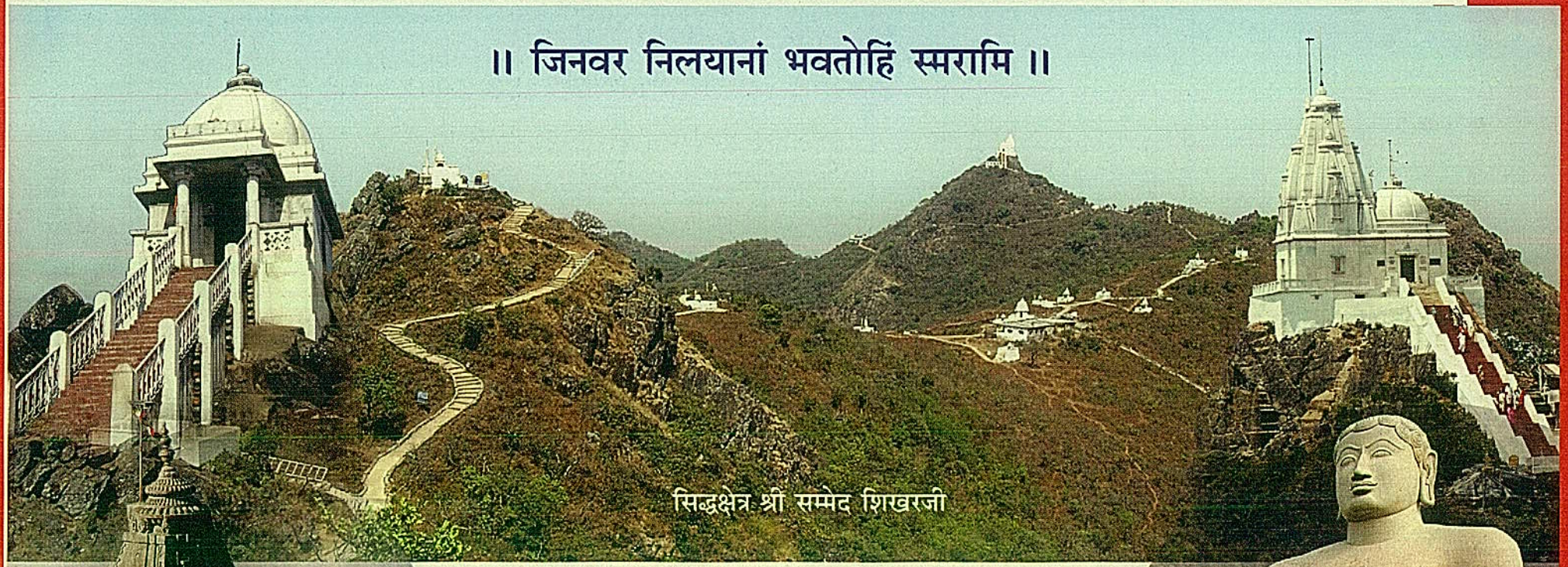

सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेद शिखरजी

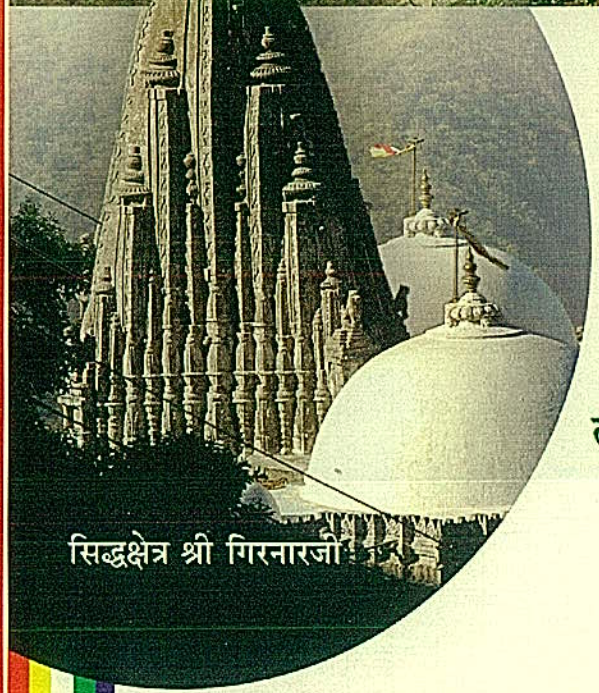

सिद्धक्षेत्र श्री गिरनारजी

हमारी संस्कृति - हमारी विरासत

तीर्थ हमारी श्रद्धा, भक्ति और आस्था के प्राण हैं।
तीर्थ हमारी संस्कृति और धर्म के प्रतीक हैं।
तीर्थ हमारी मोक्ष साधना के प्रेरक निमित्त हैं।

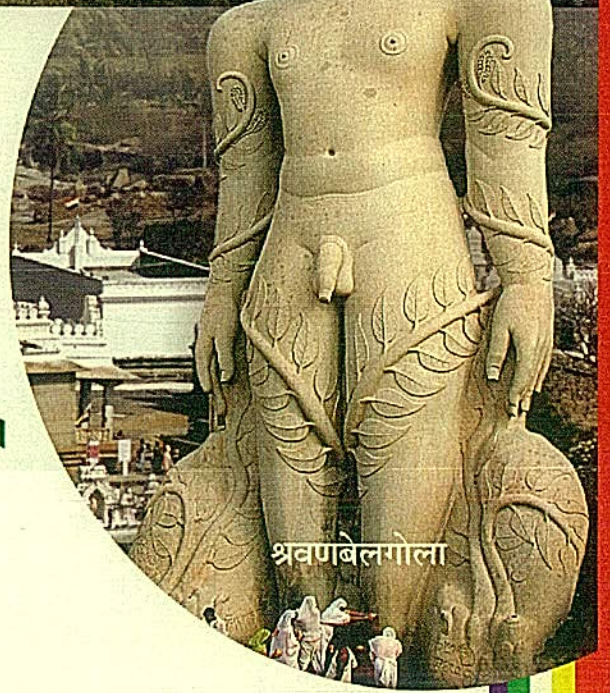

श्रवणबेलगोला

मान्यवर,

पर्वराज पर्यूषण के इस सुमंगलकारी अवसर पर आपकी भक्ति भावना संबोलत हो और रत्नत्रय साधना के मार्ग पर आप

गतिमान होते रहें, यही हमारी शुभकामना है।

तीर्थों के संरक्षण, संवर्धन तथा सम्यक विकास हेतु कटिबद्ध, आपकी यह शीर्षस्थ संस्था भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने सभी तीर्थों की समस्याओं के समाधान हेतु सकारात्मक प्रयत्न किये हैं एवं करने हेतु प्रतिबद्ध भी है।

शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर, ऊर्जयंत श्री गिरनारजी, अंतरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र सिरपुर एवं श्री ऋषभदेव (केसरियानाथजी) आदि सभी दिगम्बर तीर्थों की अस्मिता के विरुद्ध उठे हर कदम का सशक्त प्रतिकार तीर्थक्षेत्र कमेटी ने किया है और करते रहने को प्रतिबद्ध भी है।

तो आइये, हम सब मिलकर पर्यूषण पर्व पर तीर्थरक्षार्थ दान देकर एक नई शुरुआत करें।

अपने धर्मस्थल हैं, अपनी फुलवारी।
इनकी रक्षा करनी है, अपनी जिम्मेदारी॥

-: निवेदक :-

सरिता एम.के.जैन, चेन्नई
राष्ट्रीय अध्यक्षा

संतोष जैन पेंढारी, नागपुर
राष्ट्रीय महामंत्री

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई-400 004.
फोन : 022-2387 8293, फैक्स : 022-2385 9370
Email : tirthvandana4@yahoo.com, tirthvandana4@gmail.com,

कृपया अपनी दान राशि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड ब्रांच, मुंबई-4 के सेविंग खाते क्रमांक 13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक ब्रांच, मुंबई-4 के सेविंग खाते क्रमांक 001210100017881 में जमा कराकर उसकी सूचना देने की कृपा करें।

वीर निर्वाण संवत् : 2543

या Way of Life भी कहते हैं। फर्क इतना है कि दश लक्षण धर्म में बताई जाने वाली जीने की कला पूर्णत: परीक्षित (Well Tested) है और आज के गुरुओं द्वारा बताई जाने वाली Art of living अभी परीक्षण के दौर में हैं।

दश लक्षण पर्व के दस धर्म निम्नवत् हैं-

1. उत्तम क्षमा- अपने मन के मुताबिक कार्य न करने पर दूसरों के प्रति अनावश्यक क्रोध नहीं करना। यदि सामने वाला कोई कार्य गलत कर रहा है तो उसे समझा देना। उसे समझाने की मनाही नहीं है। किन्तु क्रोध कर स्वयं के विवेक अथवा मानसिक शांति को नष्ट करने से कोई फायदा नहीं। विपरीत परिस्थितियों में भी मन को शांत रखकर, न्याय एवं नीति संगत, विवेकपूर्ण आचरण करना तथा विरोधी के प्रति यथासंभव क्षमाभाव रखना ही क्षमा है। यदि आप दूसरे के अपराध की उपेक्षा कर क्षमाभाव रखेगें तो समाज में और मित्रों में आपकी प्रतिष्ठा बढेगी जिसका लम्बे समय में आपको फायदा होगा। इसका पूर्ण रुपेण पालन अर्थात क्रोध का पूर्ण परित्याग ही उत्तम क्षमा है।

2. उत्तम मार्दव- जाति, कुल, धर्म, ज्ञान, सौन्दर्य, शारीरिक, बल, धन, ऐश्वर्य आदि का अहंकार न करते हुए सभी के प्रति सौम्य। सरल एवं सहयोगी भाव रखना मार्दव हैं एवं मान कषाय का पूर्णरूपेण त्याग उत्तम मार्दव है।

3- उत्तम आर्जव- अपने साथियों के बीच चालाकी करना, धोखा देना और धोखे से कुछ प्राप्त कर लेना लम्बे समय में नुकसान दायक ही होता है अर्थात् मायाचारी पूर्वक चालाकी से आज आप अपनी पात्रता बना लेंगें तगो कल उसे गंवाना भी पड़ेगा। चालाकी, मायाचारी छोड़ना अर्थात सरल सहज निष्ककपट जीवन जीना ही आर्जव हैं।

4. उत्तम शौच-संसार में कहावत है लोभ पाप का बाप बखाना। हम अपनी पात्रता से अधिक पैसा, इज्जत या सामग्री पाने के लिये हिंसा, झूठ, चोरी आदि करते हैं। यदि व्यक्ति के जीवन में लालच नहीं हो तो वह इन बुराईयों से बच सकता हैं। लालच के बिना कबिलियत के हिसाब से जो चीज मिलती है उसके साथ इज्जत भी मिलती है। इसलिये जीवन में लालच नहीं करना चाहियें। यही शौच है।

5. उत्तम सत्य-सत्यवादी हरिशचन्द्र की कहानियों तो सब को मालूम हैं। यदि आप इतना न कर सकें तो यह तो कर ही सकते हैं कि सच बोले, प्रिय और मीठा बोले अर्थात् ऐसे शब्द बोले जो सच भी हो और दूसरे को अप्रिय न लगे। लंगड़े को लंगड़ा और काने को काना न बोले। हाँ। चापलूसी में दूसरे को अच्छा लगने वाला झूठ भी नहीं बोलना चाहिये। यही सत्य है।

6. उत्तम संयम- ज्यादा खाना, ज्यादा घूमना, ज्यादा बोलना, अन्तत: अपने को नुकसान ही पहुँचाता है। अत: अपनी मन की इच्छाओं पर नियंत्रण करके रहना और जितना जरूरी हो उतना ही करना यही तो संयम है। दिन में एक बार सीमित मात्रा में भोजन और जल लेने वाले, आवश्यकतानुसार ही श्रावकों के प्रश्नों का उत्तर देने वाले, दि. जैन संतों की संयम साधना से कौन अपरिचित है।

7. उत्तम तप-शास्त्रों में तो 12 प्रकार के तप बताये गये हैं। लेकिन मैं यहाँ केवल दो प्रकार के तप की बात कर रहा हूँ। अनावश्यक प्रपंचों से दूर रहकर सज्जनों द्वारा लिखा गया साहित्य पढना अथवा अपने विषय के विशेषज्ञों द्वारा लिखा गया श्रेष्ठ साहित्य पढना और भूख से कम सीमित मात्रा में भोजन करना आदि तप हैं। अपनी आकांक्षाओं एवं उपयोग की सामग्री को सीमित करना भी तप है। समाज के वरिष्ठ, सेवाभावी संतों, व्रतियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं को सम्मान देना भी तप है। इसका नाम कुछ भी रख लो।

8. उत्तम त्याग- अपनी आवश्यकताओं की सीमित करना तथा विभिन्न प्रकार की जरूरतों के लिये जरूरतमंदों को दवाईयों, भोजन, वस्त्र आदि देना दान है। विभिन्न प्रकार की सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक गतिविधियों, साहित्य का प्रकाशन, धन के प्रति ममत्व को त्यागकर दान देने वाले व्यक्तियों के कारण ही चल पाती है। विभिन्न प्रकार के दुर्गुणों, क्रोध, अहंकार, मोह, लोभ आदि को छोड़ना त्याग है। त्यागी और दानी स[illegible] आदर पाते हैं। भोगी या कंजूस नहीं।

9. उत्तम आकिंचन्य- व्यक्ति की जरूरतें तो कम हैं, किन्तु लालसायें अधिक हैं। यही कारण है कि अपनी जरुरतों से ज्यादा धन इकट्ठा कर लेते हैं। मुकेश या अनिल अंबानी, टाटा या बिड़ला के पास इतनी सम्पत्ति है कि उनकी कई पीढीयों भी उन्हें खर्च करें तो खत्म नहीं होगी, किन्तु उनकी धन कमाने की पिपासा कम नहीं हुई है। जब तक धन या संसाधनों का संग्रहण होता रहेगा समाज या राष्ट्र में सुख, शांति नहीं आ सकती।

जैनाचार्यों द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों की कसौटी पर पूँजीवाद और समाजवाद दोनों खरे नहीं उतरते। नीति या न्याय का विचार किये बगैर किसी के शोषण से कमाया गया धन बेकार है। वहीं शासन के कानून के तहत सम्पत्ति का समान वितरण करने का प्रयास कभी सफल नहीं हो सकता क्योंकि सभी का प्रारब्ध और सभी की प्रतिभायें अलग-अलग है। आकिंचन्य धर्म में यह बताया गया है कि न्याय और नीति पूर्वक, किसी का शोषण कि[illegible] बगैर पैसा कमाओं। अपने और परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद शेष बची राशि समाज के जरूरतमंद लोगों में बाँट दें। जरूरत से ज्यादा पैसों के आप ट्रस्टी बनकर रहो यही गाँधीजी के ट्रस्टीशिप का सिद्धांत हैं। यही आकिंचन्य धर्म है। इससे आपके मन को दूसरे लोगों को मदद पहुँचाने के कारण शांति मिलेनी और समाज में प्रतिष्ठा भी। राष्ट्र की उन्नति का यही मूल मंत्र हैं।

10. उत्तम ब्रह्मचर्य- पाश्चात्य संस्कृति से ब्रह्मचर्य की अवधारणा बिलकुल मेल नहीं खाती, किन्तु उन्मुक्त जीवन का परिणाम क्या निकला? अमेरिकी अथवा ब्रिटिश समाज का समाजशास्त्रीय अध्ययन, उनके समाज की टूटन, घुटन दर्दनाक पहलू का बखान करते हैं, किन्तु उनका एक उपहार जो भारत को मिल गया, वह है एडस। ब्रह्मचर्य अर्थात् अपने जीवनसाथी के प्रति वफादार रहने के नियम के पालन से इस महामारी को आसानी से रोका जा सकता हैं। यद्यपि ब्रह्मचर्य बहुत व्यापक है जिसकी यहाँ चर्चा संभव नहीं, किन्तु संक्षेप में जीवन साथी के प्रति वफादारी से इसे समझा जा सकता है।

मित्रों धर्म के इन दश लक्षणों में जो कुछ करने या न करने की बात बताई गई है यदि उसको इकट्ठा समझा जायें तो यह एक सुव्यवस्थित जीवन शैली अर्थात् जीवन जीने की कला ब जाती है। आज दशलक्षण पर्व पर जरुरत इस बात की है कि हम अपने परिवार के किशोरों और युवाओं को इस जीवन शैली के फायदे बतायें। इनकी व्यावहारिकता बतायें। इससे वे समाज से जुड़ेंगे तथा समाज की शक्ति बढेगी।

अपने अनुभव के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि केवल यही वह जीवन शैली है जो आपको सुखी, संतुष्ट और सफल जीवन दे सकती है। लेकिन अफसोस कि हमने वैज्ञानिक दृष्टिकोन सम्पन्न जैन धर्म की इस जीवन शैली को जाना ही नहीं, पढ़ा ही नहीं, अपनाया ही नहीं और छद्म गुरुओं के पास शांति ढूंढने निकल गये। दशलक्षण पर्व एक अच्छी शुरुआत का माध्यम बनें यही शुभकामना हैं।

दशलक्षण की समाप्ति तो सितम्बर के प्रथम सप्ताह में ही जो जायेगी एवं जैन तीर्थ वन्दना का अगला अंक लगभग 20 सितम्बर तक आपके हाथों में पहुँचेगा। अत: दशलक्षण के बाद की भी चर्चा करना जरुरी है। हमारी समाज में यह परम्परा है कि दशलक्षण पर्व के बाद के 15 दिनों में तीर्थयात्राओं पर अनेक परिवार जाते हैं। कुछ साधु संतों के दर्शन को जाते हैं। इस सन्दर्भ में मेरा निवेदन है कि आप अपने नगर/ग्राम के समीपवर्ती तीर्थ जरूर जायें क्योंकि उसके संरक्षण एवं विकास की आपकी पहली जिम्मेदारी है। आप समीप के एक न एक तीर्थ से जरूर जड़े, उसे अपनायें, उसका विकास करें, उस तीर्थ पर लगा एक पौधा भी उसकी हरियाली बढ़ायेगी। छोटा सा दान भी बड़ा योगदान बन सकता है।

जब एक से अधिक तीर्थ पर जाने की अनुकूलता हो तो अतिशय क्षेत्रों की अपेक्षा कल्याणक क्षेत्रों को वरीयता देवे। 26 जन्मभूमियों एवं 5 निर्वाण भूमि सदैव ही आपकी प्राथमिकता में होने चाहिये।

तीर्थ यात्राओं के अपने अनुभव, सकारात्मक रचनात्मक सुझावों सहित आमंत्रित हैं।

गोरेगांव मन्दिर में ऐतिहासिक भगवान पाश्वनार्थ निर्वाणोत्सव कार्यक्रम
सान्निध्य: मुनि प्रज्ञासागर जी महाराज

डॉ . सुधीर जैन

पहली बार प.पू. गुरुदेव व मुनि प्रज्ञासागर जी महाराज के मंगल सानिध्य में विशाल शोभा यात्रा निकाली गई, मंदिर जी से विशाल शोभा यात्रा में चांदी से बना रजतमय विशाल रथ में सौधर्म इन्द्र बने दिनेश भाई शंकरलाल परिवार ने भगवान पार्श्वनाथ को विराजमान किया, श्री किरीट दोशी ने कुबेर का भार सम्भाला। श्री सुधीर भाई (मामा जी) ने चवंर डुलाएं, रथ के आगे घोड़े व बघियों का विशाल जलूस चल रहा था 108 सौभाग्यवती महिलाओं ने विभिन्न नृत्य प्रस्तुत किये, श्रावक गण जिनधर्म की पचरंगी ध्वजा फहरा रहे थे, बड़ा ही मनोरथ दृश्य था।

पूज्य आचार्य पुष्पदन्त सागरजी के प्रिय शिष्य गुरुदेव मुनि प्रज्ञा सागर के सानिध्य में शुरू हुई इस शोभा यात्रा का समापन हुआ व पार्श्वनाथ के चरणों में 23 किलो का लाडू चढाया गया, निर्वाण लाडू चढाने का सौभाग्य ट्रस्ट के प्रमुख श्री पंकज जी सवाईलाल परिवार को मिला, व 23 इन्द्र परिवारों द्वारा 23 निर्वाण लाडू भी समर्पित किये गये, पू. गुरुदेव ने अपने मंगल प्रवचन में कहा कि आप सभी अपना जीवन लड्डू की तरह मीठा बना लें तो हमें भी भगवान के चरणों में चढ़ने का अवसर मिलेगा गुरुदेव ने कहा कि हम सभी भक्तों को

चाहिये कि हम भी भगवान पार्श्वनाथ की तरह शत्रु को क्षमा करें और शत्रु से क्षमा मांगना सीखे, भगवान ने संदेश दिया कि क्षमा मांगने वाला क्षमा मांगकर हर भव में बड़े से बड़ा होकर एक दिन भगवान बन जाता है, इसलिये मरुमूर्ति बनकर आज से क्षमा मांगना प्रारम्भ करें तो क्षमा वाणी तक अपने को पार्श्वनाथ का सच्चा भगत बना लें और एक दिन भगवान पार्श्वनाथ बनने का प्रयास करें।

शांती धारा का लाभ श्री शांतीलालजी सुखलाल जी जैन परिवार को मिला श्रीमती संतोष प्रफुल बाकलीवाल छिंदवाड़ा ने भगवान को द्वार पर माँ बनकर रोकने का लाभ लिया, अरिंहत पंकज कुमार बाकलीवाल ने गंधोदक वृष्टि की पांच दिनों से हो रहे विधानों का समापन भी हुआ, गुरुदेव ने सभी ट्रस्टीयों को आशीर्वाद भी दिया। मंच संचालन श्री मयकं भाई व श्री सुधीन्द्र जैन (मामाजी) ने किया।

स्व श्री रमेशकुमार जी पहाड़े

यह सूचित करते हुए दु:ख हो रहा है कि हैद्राबाद दिगम्बर जैन समाज के कर्मठ कार्यकर्ता परम मुनि भक्त श्री रमेशकुमार पहाड़े का अल्प आयु में दिनांक 3/5/2017 को दु:खद निधन हो गया हैं। जीवन एवं मृत्युं प्राणी मात्र की ऐसी दो क्रियाएँ हैं जो सुनिश्चित हैं कराल काल पर किसी का वश नहीं हैं कब, कहाँ, किस समय किसके जीवन की सांझ हो जायेगी यह कोई नहीं जानता फिर भी हम संसारिक प्राणी अपनो से विछोंह होने पर दु:खी हो जाते हैं। श्री रमेशकुमार के हुए देहावसान से उनके कूटुम्बी जनों पर जो दु:ख आ पड़ा हैं। उसमें भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार शोक, संवेदना व्यक्त करता हैं। दिवंगत आत्मा को चिर शांति एवं उनके कूटुम्बीं जनों को यह अपार दु:ख सहन करने की शक्ति मिलें ऐसी वीर प्रभु प्रार्थना करते हैं।

Accelerated the Temple building activities and growth of Jainism in North Tamilnadu.

Thus Jainism had its resurrection in the northern parts of Tamilnadu. The trend reached its peak in the 16th century when Virasenacharya established the Jinakanchi Jain Mutt at Melsiththamur. He mobilised entire Jain community under one roof and every Jaina settlement in newer areas built their temples. They vividly describe the legendary history of the Jains of northern Tamilnadu.

As time passed, due to various reasons - poor economic conditions, non - patronage by the government, declining prospects in agriculture, affected the maintenance of the temples; this has resulted in many places, almost complete destruction as in Keez Vailamur where the Jinalayam is more than 800 years old and it was the worship place for more than 8 jaina villages; by the great and great philanthropy of BDJTKC the dilapidated Jinalayams are getting new lease of life, also constructing small shrines for the abandoned Thirthankar Statues, Unearthed across Tamilnadu.

What could be a greater Margaprabhavana than this sacred act of preserving the old temples?

Shri ADHINATHAR JAIN TEMPLE,
Keez Vailamur, Tindivanam - Tk, Villupuram - Dt,
Pin - 605651.
GPS Location - 12.14913, 79.51264
Route: Chennai - Tindivanam - Kutteripattu - Keezhvailamur = 148 k.m
Contact: Mr. Rajendran Nainar : +91 9488456327
Renovation Cost: Rs.25 L
Donation By BDJTKC: Rs.15 L

Shri PARSWANATHAR JAIN TEMPLE
Nedi Mozhianur, Tindivanam - Tk, Villupuram - Dt,
Pin - 604306.
GPS Location - 12.13969, 79.56384
Route: Chennai - Tindivanam - Kutteripattu–Nedimozhianur = 145 k.m.
Age: > 200 Years old
Contact: Mr. Adhirajan Nainar : +91 9443048562
Renovation Cost: Rs.1.5 L
Donation By BDJTKC: Rs.1.0 L

Shri MAHAVEERAR JAIN TEMPLE,
Esakulathur, Vandavasi - Tk, Thiruvannamalai - Dt,
Pin - 604502
GPS Location - 12.4491, 79.42686
Route: Chennai - Vandavasi - Chetpet road - Endal cross road - Esakulathur = 132 kms.
Age: > 200 Years old
Contact: Mr. Adhirajan Nainar : +91 9443048562
Renovation Cost: Rs.20.0 L
Donation By BDJTKC: Rs.8.0 L

Shri MAHAVEERAR JAIN TEMPLE
Vazhapandal, Arcot - Tk, Vellore - Dt, Pin - 632318.
GPS Location - 12.6310293,79.3761574
Route: Chennai - Vandavasi - Arni road - Vazhapandal - 142kms.
Age: > 300 Years old
Contact: Mr. Indiran Nainar +91 9677385995
Renovation Cost: Rs.35.0 L
Donation By BDJTKC: Rs.8.0 L

Shri PARSHWANATHAR JAIN TEMPLE
Thirunarungundram, Ulundurpet - Tk, Villupuram - Dt, Pin - 604410
GPS Location – 11.81181, 79.28243
Route: Chennai - Vandavasi - Tindivanam - Ulundurpet - Thiruvannainallur salai - Pillaiyarkuppam - Thirunarungundram = 231 kms.
Age: > 1100 Years old
Contact: Er. Appandairajan Nainar +91 9842310707
Construction of Yatri Nivas - Cost: Rs.150 L
Donation By BDJTKC: Rs. 5.0 L

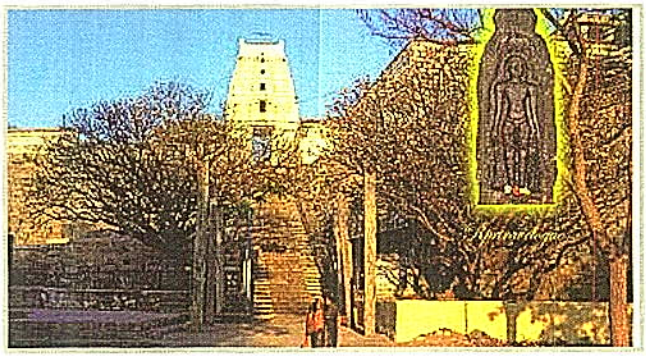

Shri SANTHINATHAR JAIN TEMPLE
Pillur, Arni - Tk, Thiruvanamalai - Dt, Pin - 605001.
GPS Location – 12.43063, 79.0905
Route : Chennai - Vandavasi - Chetpet - Polur - Tiruvannamalai road – Pillur = 172 Kms
Age: New (old destroyed)
Contact: Mr. Padmaraj Nainar +91 7200799269
Renovation Cost: Rs.15 L
Donation By BDJTKC: Rs. 2.0 L

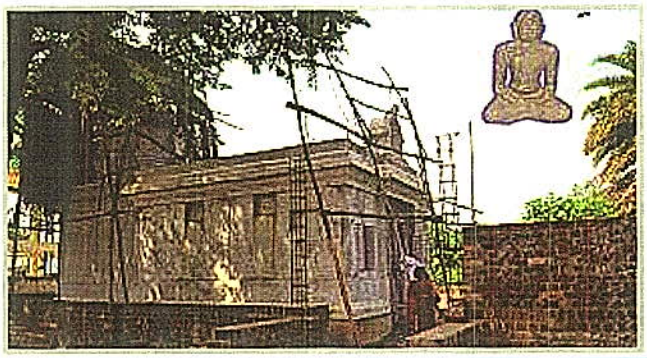

Shri Neminathar Jain Temple
Renderipattu, Pollur - Tk, Thiruvanamalai - Dt, Pin - 606803.
GPS Location – 12.5244, 79.12645
Route : Chennai - Vandavasi - Chetpet - Polur - Renderipattu = 177 Kms
Age: > 25 Years
Contact: Mr. Padmaraj Nainar +91 9092005537
Renovation / Yatri nivas Building Cost: Rs.21.5 L
Donation By BDJTKC: Rs. 2.0 L

Shri ADHINATHAR JAIN TEMPLE
Sathuperipalayam, Arni - Tk, Thiruvanamalai - Dt, Pin - 606907.
GPS Location – 12.57902, 79.24206
Route: Chennai - Vandavasi - Arni - Devikapuram road - Thatchur samathuvapuram - Sathuperipalaiyam =167 kms.
Age: > 300 Years
Contact: Mr. Jinanantham Nainar +91 9600382017
Renovation Cost: Rs.12.0 L
Donation By BDJTKC: Rs. 6.59 L

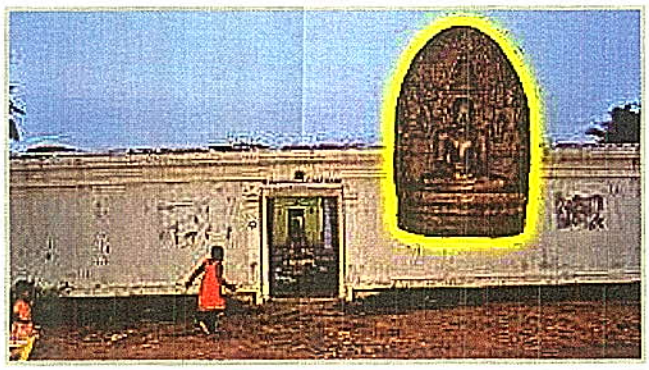

Shri ADHINATHAR JAIN TEMPLE
Koliyanur, Villupuram - Tk & Dt, Pin - 605103
GPS Location – 11.93097, 79.54527
Route: Chennai - Tindivanam - Vikravandi - Kumbakonam road - Koliyanur = 163 kms.
Age: New (old destroyed)
Contact: Mr. Adhirajan Nainar : +91 9443048562
Renovation Cost: Rs.100.0 L
Donation By BDJTKC: Rs. 5.0 L

Shri ADHINATHAR JAIN TEMPLE
Uppuvelur, Vanur - Tk, Villupuram - Dt, Pin – 604154
GPS Location - 12.129313,79.7936583
Route: Chennai - Vandavasi – Tindivanam - Pondy road - Kodipakkam - Uppuvelur = 174 k.m.
Age: >300 Yrs
Contact: Mr.Ananthavijayan Nainar : 09486788020
Renovation Cost: Rs. 20.0 L
Donation By BDJTKC: Rs.5.0 L

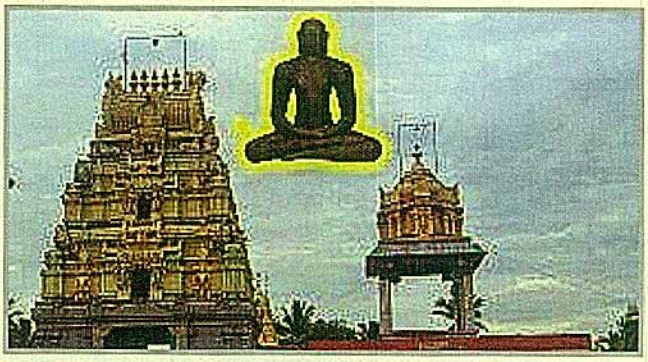

Shri MAHAVEERAR JAIN TEMPLE
Mullipattu, Arani - Tk, Thiruvanamalai - Dt,
Pin - 632316
GPS Location – 12.6705, 79.26028
Route: Chennai - Vandavasi - Arni – Mullipattu = 157 kms.
Age: >800 Yrs
Contact: Mr. Rajee Nainar : +91 7598753880
Renovation Cost: Rs. 10.0 L
Donation By BDJTKC: Rs.3.90 L

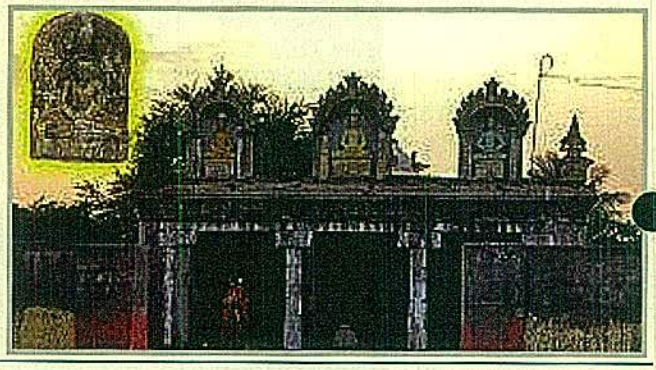

Shri ADINATHAR JAIN TEMPLE
Deepangudi, Kodavasal - Tk, Thiruvarur - Dt.
Pin - 612603
GPS Location – 10.8298, 79.55805
Route: Chennai - Kumbakonam - Arasavanangadu - Deepangudi = 305 kms.
Age: >900 Yrs
Contact: Mr. Yasodharan Nainar : +91 9841822889
Renovation Cost: Rs. 15.0 L
Donation By BDJTKC: Rs.3.0 L

Shri Adhinathar Jain Temple
Ponnur hills, Vandavasi Tk, Thiruvanamalai - Dt,
Pin - 604408 (Tapo Bhoomi of Acharya Kund Kund Dev)
GPS Location – 12.50155, 79.52362
Route: Chennai - Vandavasi - Chetpet road - Ponnur Hill = 119 k.m.
Age: >50 Yrs
Contact: Mr. Srenigarajan Nainar : +91 9443263352
Renovation Cost: Rs. 10.0 L
Donation By BDJTKC: Rs.1.0 L

Shri Adhinathar Jain Temple – Pushpadant Sagar Yatri Nivas
Ponnur hills, Vandavasi Tk, Thiruvanamalai - Dt, Pin - 604408
(Tapo Bhoomi of Acharya Kund Kund Dev)
GPS Location – 12.50155, 79.52362
Route: Chennai - Vandavasi - Chetpet road - Ponnur Hill = 119 k.m.
Contact: Mr. Sanjay Toliya : +91 9443616595
Construction of Yatri Nivas Cost: Rs. 150.0 L
Donation By BDJTKC: Rs.10.0 L

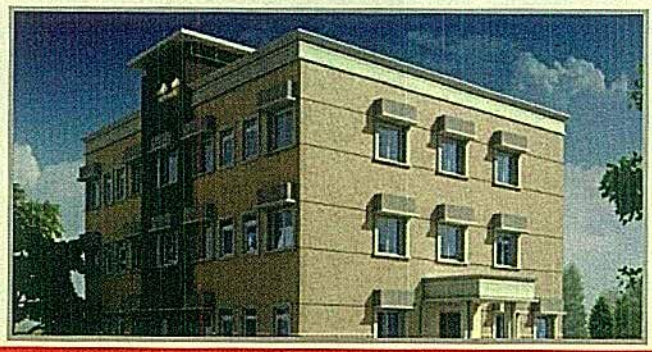

Shri PARSHWANATHAR JAIN TEMPLE
Tindivanam, Tindivanam - Tk, Villupuram - Dt, Pin - 604001
GPS Location – 12.2341, 79.64845
Route: Chennai - Tindivanam = 120 kms.
Age: >40 Yrs, Moolnayak - >100 Yrs
Contact: Mr. Babu Nainar : +91 9443987762
Renovation Cost: Rs. 15.0 L
Donation By BDJTKC: Rs.1.0 L

Shri Mahaveer Jain Temple
Maganipattu, Kaverypakkam - Tk, Vellore-Dt.
GPS Location – 12.9446144,79.471203
Route: Chennai – Kanchipuram – Kaverypakkam = 100
Age: New, Moolnayak - >800 Yrs
Contact: Mr.: +91 9443987762
Construction of Shrine for abandoned Thirthankar statue - Cost: Rs. 0.90 L
Donation By Sri.Rajkumar Ranjana Bakliwal, Sri.Rishi Rashmi Bakliwal, Sri.Rohith Manisha Bakliwal – Dimapur, Delhi through BDJTKC: Rs. 0.90 L

Shri Mahaveer Jain Temple
Arcadu, Thirukoilur - Tk, Villupuram - Dt.
GPS Location – 11.943889, 79.327778
Route: Chennai – Tindivanam – Villupuram – Madappattu – Peria Sevalai – Marangiyur – Ayathur Road Via Paiyur – 191 KM.
Age: New, Moolnayak - >800 Yrs
Contact: Mr.Baskaran +91 9894674092 Construction of Shrine for abandoned Thirthankar statue - Cost: Rs. 0.80 L
Donation By Sri.M.K.Jain through BDJTKC: Rs. 0.80 L

Shri Mahaveer Jain Temple
Ravuthanallur, Uttiramerur - Tk, Kanchipuram - Dt.
GPS Location – 12.631750, 79.704944
Route: Chennai – Chengalpet – Uttiramerur = 90 KM
Age: New, Moolnayak - >800 Yrs
Contact: Mr.Appandairajan : +919865591549
Construction of Shrine for abandoned Thirthankar statue - Cost: Rs. 0.90 L
Donation By Smt.Suryakanta Jain, Kolkatta through BDJTKC: Rs. 0.90 L

Shri Mahaveer Jain Temple
Irungur, Cheyyar - Tk, Thiruvannamalai - Dt.
GPS Location – 12.693806, 79.446639
Route: Chennai – Kanchipuram – Cheyyar – 100 KM.
Age: New, Moolnayak - >800 Yrs
Contact: Mr.Baskaran +91 9843798939 Construction of Shrine for abandoned Thirthankar statue - Cost: Rs. 1.10 L
Donation By Sri.Prakash Chand Barjatya – Secretary, Shri Bharatvarshya Digamber Jain Mahasabha – Delhi: Rs. 1.00 L

Shri Mahaveer Jain Temple
Veeramadai, Thirukoilur - Tk, Villupuram - Dt.
GPS Location – 11.928209, 79.310324
Route: Chennai – Tindivanam – Villupuram – Madappattu – Peria Sevalai – Marangiyur – Ayathur Road Via Paiyur – Arcadu – 196 KM.
Age: New, Moolnayak - >800 Yrs
Contact: Mr.Appandairajan : +919865591549
Construction of Shrine for abandoned Thirthankar statue - Cost: Rs. 1.50 L
Donation By BDJTKC: Rs. 0.65 L

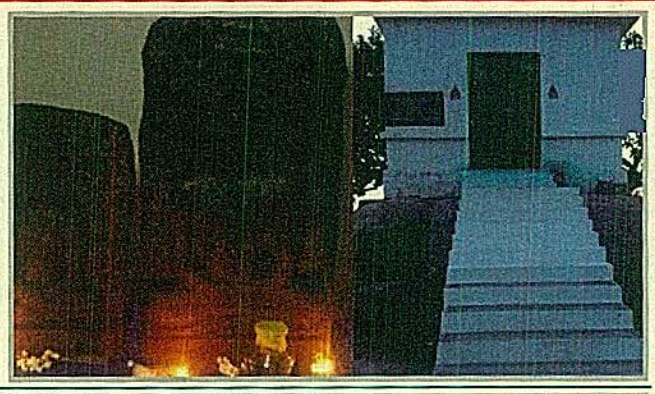

Shri Munisvrutnath Jain Temple
Krishnapuram, Gingee - Tk, Villupuram – Dt, PIN - 604202
GPS Location – 12.2558938,79.4063304
Route: Chennai – Tindivanam – Gingee – 160 KM.
Age: New, Dilapidated Temple - >800 Yrs
Contact: Mr.Settu : +91 9751117671
Construction of Temple, Yathi Nivas, Compound Wall - Cost: Rs. 45.00 L
Donation By BDJTKC: Rs. 8.00 L

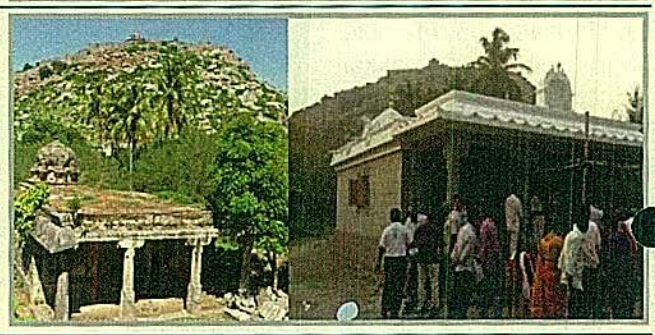

Shri Mahaveer Jain Temple
Eeralachery, Kaverypakkam - Tk, Vellore - Dt.
GPS Location – 12.907861, 79.490417
Route: Chennai – Kanchipuram –Kaverypakkam = 100
Age: New, Moolnayak - >800 Yrs
Contact: Mr.Prabhakaran : +91 9443436730
Construction of Shrine for abandoned Thirthankar statue - Cost: Rs. 2.00 L
Donation By Sri.Mahendra Kumar Dhakda, Chennai: Rs. 2.00 L

Shri Parsvanathar Jain Temple
Mel Sitttamur, Gingee - Tk, Villupuram - Dt, PIN - 604206
GPS Location – 12°16′11″N79°30′51″E
Route: Chennai – Tindivanam – Vallam = 142 KM
Age: >1200 Yrs & 1800 Yrs Malainathar Temple
Contact: Sri Lakshmisen Bhattarak Swamiji, Jinakanchi Jain Mutt, Custodian of Digamber Jain Temples in Tamilnadu : +91 9443153753
Renovation and Panchakalyanak in 2009 Cost: Rs.35.00 L
Donation by BDJTKC: Rs16.11 L
Construction of Multi-function Centenary hall in 2016 - Cost: Rs. 25.00 L
Donation By BDJTKC : Rs.10.00 L

Shri Neminathar Jain Temple
Thirumalai, Polur - Tk, Thiruvannamalai - Dt, PIN - 606907
Google map coordination – 12.22°N 79.07°E
Route : Chennai – Kanchipuram – Arcot – Arni = 152 KM
Age : >20 Yrs and the hill Temple is >1200 Yrs Contact : Sri Tavalakeerthi Bhattarak Swamiji, Shree Kshetra Arihantagiri Jain Mutt : +91 8144004066
Renovation, Construction of Yatri Nivas, Multifunction hall Cost : Rs.35.00 L
Donation by BDJTKC : Rs13.50 L

Jeernodhar of an Ancient Temple is equivalent to constructing 100 New Temples.

श्री 1008 खजुराहो क्षेत्र पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा प्रदत्त आंशिक सहायता राशि से पूर्ण कार्य की झलकियाँ

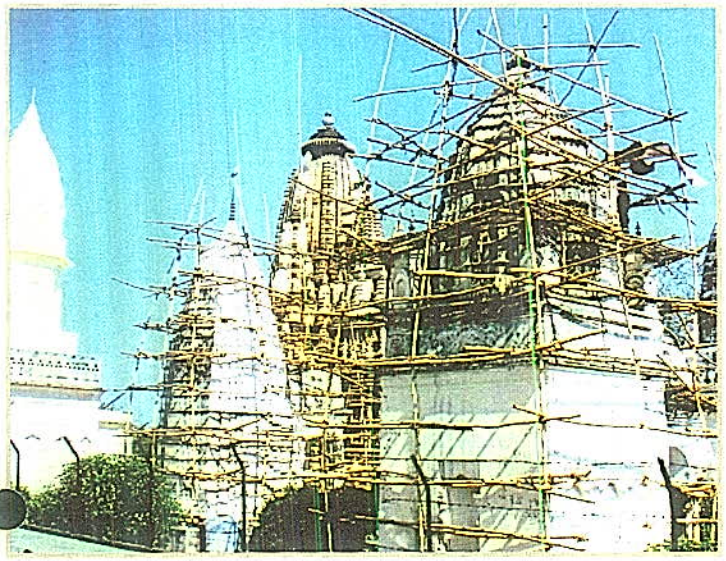

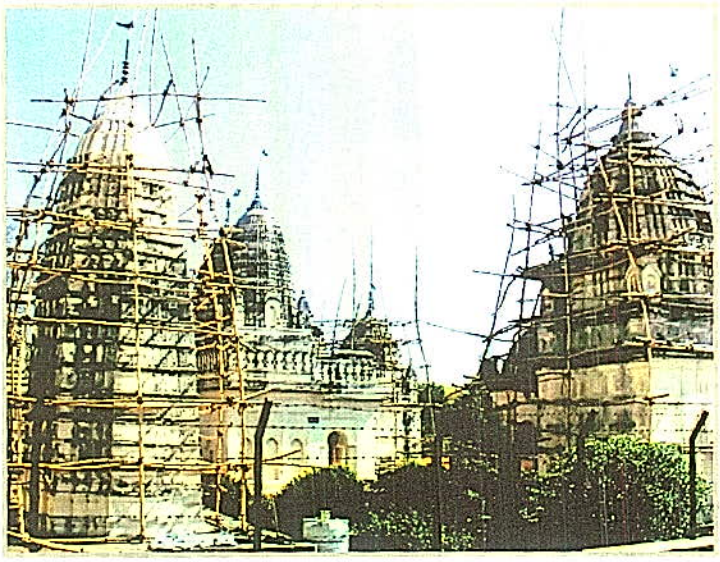

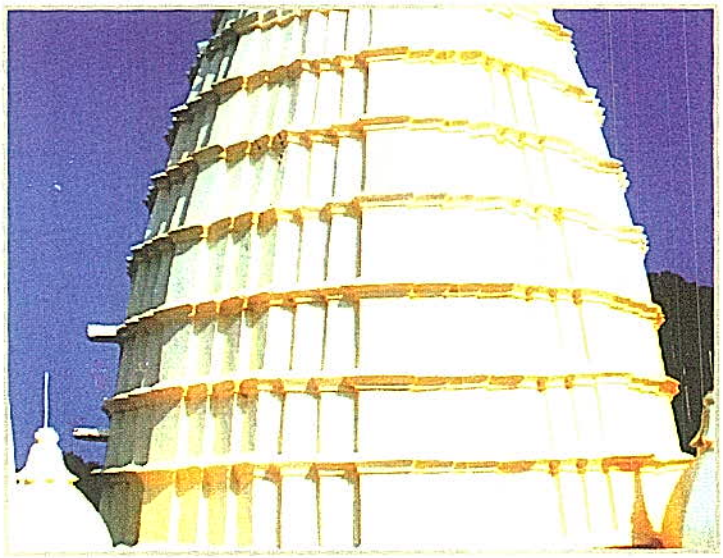

कनकगिरि के प्रभावी पार्श्वनाथ

– सुरेश जैन (आई.ए.एस.)
30, निशात कालोनी, भोपाल 462003
मोबाईल 94250 10111

कनकगिरि कर्नाटक राज्य में कनार्टक, केरल और तमिलनाडू राज्यों की त्रिकोण सीमा पर स्थित है। मैसूर–चामराजनगर मार्ग पर मैसूर से 25 किलोमीटर दूरी पर स्थित नंजनगड़ ग्राम से 20 किलोमीटर दूर स्थित मलेयूर ग्राम से कनकगिरि एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। मैसूर से नंजनगड़ एवं गुण्डलूपेठ होते हुए ऊटी मार्ग जाता है। ऊटी से लौटते समय गुण्डलूपेठ से दाहिनी ओर जाकर कनकगिरि 25 किलोमीटर दूर स्थित है। मैसूर एवं नंजनगड़ से मलेयूर तक नियमित रूप से बसे आती–जाती है।

2. विशाल मनोरम शिलाखण्डों से सुशोभित यह पर्वत कनकाद्रि के नाम से भी जाना जाता है। कनकगिरि में मुख्य मंदिर पहाड़ी पर स्थित है। वर्ष 1986 में कनकगिरि में समाधिस्थ मुनि श्री 108 चन्द्रसागर जी महाराज की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में तलहटी स्थित मंदिर एवं धर्मशाला से पहाड़ी पर पहुँचने के लिए 300 सीढ़ियों का निर्माण कराया गया है। सीढ़ियॉ सरल है और इन सीढ़ियों से 30 मिनिट में पहाड़ी पर पहुँच जाते हैं। तलहटी से पहाड़ी पर कार से जाने के लिए कच्चा मार्ग बनाया गया है।

3. सुप्रतिष्ठित मुनि ज्ञानचन्द्र जी ने कनकगिरि से निर्वाण प्राप्त किया है। अतः कनकगिरि सिद्धक्षेत्र है। यह कर्नाटक राज्य का एकमात्र सिद्धक्षेत्र है। कनकगिरि पर्वत पर चौबीस तीर्थंकरों के चरण एवं टोंके बनी हुई है। आचार्य श्री विमलसागर जी, आचार्य श्री वर्धमानसागर जी, आचार्य देवनन्दि जी एवं अन्य जैनाचार्यो एवं अनेक मुनि आर्यिकाओं ने इस पवित्र क्षेत्र की वन्दना की है।

4.आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी ईसा की पॉचवी शताब्दी में इस क्षेत्र पर विराजमान रहे है। उन्होंने सर्वार्थसिद्धि, जैनेन्द्र व्याकरण, कल्याण कारण्क (आयुर्वेद) एवं समाधि शतक आदि अमूल्य ग्रन्थों की रचना की है। उनके द्वारा विश्वोदय एवं विश्वशांति की उदात्त भावना से रचित मूल संस्कृत शांतिपाठ एवं उसका हिन्दी पद्यानुवाद प्रत्येक जैन व्यक्ति के मुख से 1500 वर्ष व्यतीत होने पर आज भी मुखरित होता है। अतिशय महिमायुक्त आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी की कनकगिरि तपोभूमि एवं समाधिस्थली है। कनकगिरि में श्री 1008 भगवान पार्श्वनाथ, पद्मावती देवी, कुष्मांडिनी देवी, ज्वाला मालिनी देवी एवं क्षेत्रपाल ब्रह्मयक्ष की प्रतिमायें विराजमान हैं। इतिहासकारों के अनुसार ये प्रतिमाऐं 1500 वर्ष प्राचीन हैं।

5.आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी ने 1500 वर्ष पूर्व इस सिद्धक्षेत्र से निम्नांकित मूल संस्कृत शांतिपाठ में देश, राष्ट्र नगर राजा एवं सम्पूर्ण विश्व की शांति के लिए मनोयोग पूर्वक निम्नांकित शब्दों में प्रार्थना की –

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र समान्य तपोघनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः।
क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः।
काले काले च सम्यगवर्षतु मघवा व्याधयोयान्तु नाशम्।
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मास्म भूज्जीवालोके।
जैनेन्द्रं धमचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्य प्रदायि।।

6. विशाल चट्टानों में उत्कीर्ण 27 से भी अधिक शिलालेखों में कनकगिरि का उल्लेख मिलता है। सन् 1407 के एक शिलालेख से ज्ञात होता है कि शुभचन्द्र देव ने इस पर्वत पर

चन्द्रप्रभु भगवान की मूर्ति स्थापित की थी। कलगिरि ग्राम के सरोवर के तट पर सन् 908 का एक शिलालेख मिला हैं। इस शिलालेख में यह अंकित है कि गंगवंशीय परमानदी कोंगुणी वर्मा ने यह ग्राम तथा पर्वत जैन मंदिर के निर्माणार्थ पूज्य कनकसेन भट्टारक जी को समर्पित किया था। एक अन्य शिलालेख में अंकित है कि कनकगिरि में सन् 1792 में देशीय गण के अग्रणी और सिद्धसिंहासनेश भट्टाकलंक ने समाधिमरण किया था। इसके अतिरिक्त अनेक जैन मुनि, तपस्वी, साधको की यह सल्लेखना भूमि रही है।

7. भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, हीराबाग, मुम्बई द्वारा सन् 1988 में प्रकाशित भारत के दिगंबर जैन तीर्थ (पॉचवा भाग) कर्नाटक में यह उल्लेख है कि मलेयूर ग्राम एवं कनकगिरि जैन धर्म का सुप्रसिद्ध और सुदृढ़ गढ़ था। 14 वी से लेकर 19 वीं शताब्दि तक के शिलालेखों से विदित होता है कि कनकगिरि पर अनेक जैन बसदियॉ थीं। सन् 1181 ईसवीं में कनकगिरि पर स्थित पार्श्वनाथ बसदि के लिए किन्नरीपुर नामक गॉव दान में दिया गया था। इससे नित्यपूजा, मुनियों को आहार दान और शास्त्र दान किया जाता था।

8. कनकगिरि की 50 किलोमीटर की परिधि में स्थित ग्राम मलेयूर, हरवे, केलसूर, मूगूर, उम्मत्तूर, कुदेरू, तगडूर एवं एचिगन हल्ली में प्राचीन भव्य मंदिर हैं इन ग्रामों में अनेक जैन परिवार निवास करते हैं। इन परिवारों का प्रमुख व्यवसाय कृषि है।

9. श्रवणबेलगोला के जगदगुरू कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारूकीर्ति भट्टारक जी ने 12 जून, 1997 अक्षय तृतीया के दिन अपने शिष्य स्वस्ति श्री भुवनकीर्ति भट्टारक स्वामी जी को कनकगिरि के लिए धर्मपीठाध्यक्ष मनोनीत किया है। महास्वामी भुवनकीर्ति जी ने संस्कृत में एम.ए. एवं प्राकृत/जैनागम में आचार्य की उपाधियॉ प्राप्त की हैं। स्वामी जी बहुभाषाविद, ज्योतिषविद, उच्च कोटि के विद्वान एवं प्रखर वक्ता हैं। वे श्री कनकगिरि दिगंबर जैन सेवा समिति के स्थायी अध्यक्ष हैं।

10. यहॉ यह अंकित करना उपयुक्त होगा कि जब स्वामी जी 1997 में इस क्षेत्र पर पधारें तब तलहटी में आवास/पानी की किचिंत भी सुविधा नहीं थी। एक भी जैन श्रावक नहीं था। वे कनकगिरि पर स्थित मंदिर के एक कक्ष में ही अनेक विपरीत परिस्थितियों में अपने तीन छात्रों के साथ निवास करते थे। मंदिर के पीछे स्थित जलकुण्ड में एकत्रित वर्षाकालीन जल का ही उपयोग करते थे। अपना अध्ययन, चिंतन, मनन करते थे और क्षेत्र के विकास के लिए प्रयत्नशील रहते थे।

11. पूज्य महास्वामी जी ने जबलपुर में रहकर श्रद्धेय डॉ. (पण्डित) पन्नालाल जी साहित्याचार्य, सागर से जैन साहित्य का अध्ययन किया है। श्रद्धेय पण्डित जी के सम्मान समारोह में सागर पधार कर उन्होंने अपने गुरू के प्रति असाधारण सम्मान और आत्मीय स्नेह प्रदान किया था। मैं यह उल्लेख करना चाहता हूँ कि श्रद्धेय पण्डित जी पचास एवं साठ के दशक में मेरे एवं मेरी पत्नि न्यायमूर्ति विमला जैन के भी गुरू रहे हैं। उन्होंने हम दोनों को जैन साहित्य का अध्ययन कराया और हमारे सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया है। इस कारण से स्वामी जी हमारे गुरूभाई है।

12. पूज्य महास्वामी जी क्षेत्र के चतुर्मुखी विकास एवं मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिए पूर्ण परिश्रम, सुरूचि एवं मनोयोग पूर्वक संलग्न है। महास्वामी जी ने गत 20 वर्षो की छोटी सी अवधि में कनकगिरि की तलहटी में जिन मंदिर, आधुनिक सुविधा संपन्न अतिथि गृह, संत भवन, छात्रावास, भोजनालय, धर्मशाला का निर्माण कराया है। इस छात्रावास में 30 छात्र रकर अपना अध्ययन कर रहे हैं। सन् 2004 में हमें और हमारी पत्नि न्यायमूर्ति विमला जी को उनके आत्मीय स्नेह और आतिथ्य प्राप्त करने का सौभाग्य मिला।

13. महास्वामी जी ने अपने प्रभाव से स्थानीय व्यक्तियों, जनप्रतिनिधियों एवं समाज का स्नेह और आदर प्राप्त किया है। क्षेत्र के लिए 30 एकड़ भूमि क्रय कराई है ओर इस भूमि का सर्वोच्च पर्यावरणात्मक गुणवत्ता एवं व्यावसायिक ढंग से विकास कराया है। क्षेत्र पर धर्मार्थ औषधालय एवं वन्य औषधि उद्यान भी विकसित कराया है। स्वामी जी द्वारा आधुनिक ढंग से कराए गए विकास के कार्य निश्चित ही अत्यधिक सराहनीय एवं अनुकरणीय है।

14. महास्वामी जी की प्रेरणा से मैसूर नगर में श्री जैन शिक्षण समिति स्थापित की गई है। इस समिति को कर्नाटक सरकार द्वारा मान्यता प्रदान कर पंजीयत किया गया है। इस समिति द्वारा 10,000 वर्गफीट के विशाल प्रांगण में स्थित भवन में सफलतापूर्वक अनाथाश्रम एवं शिक्षण केन्द्र संचालित किया जा रहा है। हमें इस केन्द्र का निरीक्षण कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। जाति और धर्म से ऊपर उठकर राष्ट्रीय प्राथमिकता के अनुरूप जनकल्याण के क्षेत्र में पूर्ण निष्ठा एवं दक्षता के साथ किया जा रहा यह आवश्यक कार्य अत्यधिक प्रशंसनीय है। अन्य क्षेत्रों के पदाधिकारियों से आग्रह है कि वे इस क्षेत्र के दर्शन करें। क्षेत्र की सभी सामयिक गतिविधियों का अवलोकन करें और अपने–अपने क्षेत्र पर ऐसी लोक कल्याण की गतिविधियों को प्रारंभ करें।

भगवान बाहुबली की विशाल मूर्ति

नगर श्रवणबेगोला में प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के पुत्र भगवान बाहुबली की विशाल प्रतिमा दूर से ही दिखाई देती है, बहुत ही सुन्दर मुखाकृति एवं दैवी प्रकृति के धनी भगवान बाहुबली ने अपने भाई भरत जो अनेकों राज्यों को जीतकर अब अपने भाई बाहुबली का राज्य भी जीतना चाहते थे, के साथ युद्ध का विरोध किया।

भगवान बाहुबली के अनुरोध पर महासंहार को रोकने के लिए भरत अपने भाई बाहुबली के साथ तीन प्रकार का युद्ध करने पर सहमत हो गए। पहला दृष्टि युद्ध, बिना आँख झपकाये एक दूसरे की ओर एकटक देखना, दुसरा जलयुद्ध एक दूसरे के मुख पर पानी फेकना, तीसरा मलयुद्ध एक दूसरे से कुश्ती लड़ना। जब तीनों युद्धों में बाहुबली जीत गए तो क्रोधित होकर भरत ने बाहुबली पर चक्र चला दिया, कहा जाता है कि चक्र बगैर कुछ किए उनके पास लौट आया।

श्रुत केवली भद्रबाहु स्वामी के चरण - चन्द्रगिरि पर्वत पर

विजयी परन्तु उदास बाहुबली ने अपनी सारी सम्पत्ति भरत को सौंप दी और अपने राज्य को छोड़कर सन्यासी बन गये। कहा जाता है कि बाहुबली एक वर्ष तक दिगम्बर ध्यानमग्न खड़े रहे और अपने पिता तीर्थंकर ऋषभदेव से बहुत पहले ही केवल ज्ञान और मोक्ष प्राप्त कर लिया।

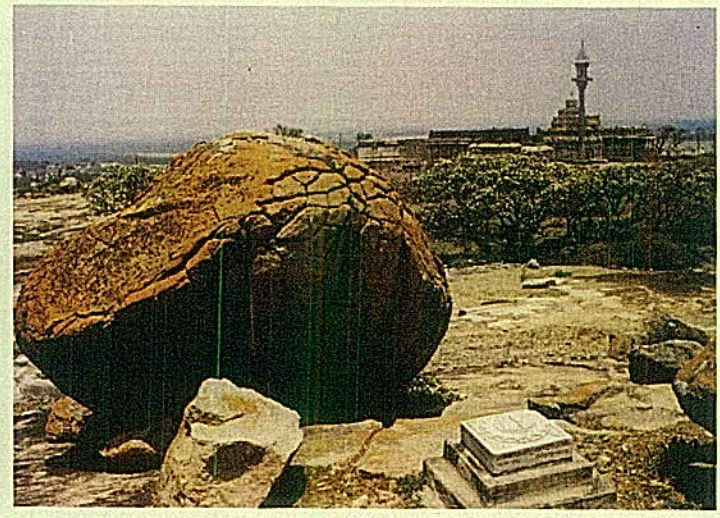

चन्द्रगिरि पर्वत

पहाड़ी पर करीने से उकेरी गई प्रतिमा यह सब कुछ दर्शाती है, उनकी शांत मुख मुद्रा, उनके तप एवं त्याग को एवं प्राणी मात्र के प्रति उनकी करूणा और प्रेम को सिर से कंधो तक जाते उनके घुँघराले बाल, उनके पैरों के आस-पास सांपो ने अपरी बांबियाँ बना ली थी। बेले उनके शरीर पर चढ़ आई थी क्योंकि बाहुबली एक वर्ष तक बिना हिले-डुले अपनी तपस्या में लीन खड़े रहे।

कहा जाता है, कि भगवान बाहुबली की प्रतिमा की स्थापना राजा चामुण्डराय द्वारा रविवार मार्च १३-९८१ को की गई। तब से लेकर हर १२ वर्ष के उपरांत प्रतिमा का नियमित रूप से महामस्तकाभिषेक किया जाता है।

अगले वर्ष फरवरी ७ से २६ के मध्य ऐसा ही ८८वाँ महामस्तकाभिषेक श्रवणबेलगोला के जैन मठाधीश भट्टारक स्वामी चारूकीर्ति जी के द्वारा किया जाएगा जो बड़े उत्साह के साथ इसकी तैयारियों मे लगे हैं। स्वामी जी १९७० में मठाधीश बने और १९८१ में उन्होंने भगवान बाहुबली की मूर्ति स्थापना के १००० वें साल का और महामस्तकाभिषेक का आयोजन किया। बाद में वर्ष १९९३ एवं २००६ में भी इसकी पुनरावृति हुई।

इस महान आयोन को जन कल्याण के साथ जोड़ते हुए जैन मठ सेवा के निम्न कार्य करता आ रहा है-

१९८१- एक हजार लोगों के मुफ्त मोतिया बिन्द आपरेशन।

१९९३- चार सौ लोगों का कृत्रिम अंगों का वितरण।

२००६- पच्चास विस्तर वाले एक बच्चों के अस्पताल और एक इंजीनियरिंग कालेज के लिए धन एकत्रित करना।

२०१८- अस्पताल में और २०० विस्तर के विस्तार के लिए और धन एकत्रित करना।

इस प्रकार से १२ वर्ष में एक बार होने वाला यह आयोजन केवल भक्ति पूजा या तीर्थयात्रा न होकर समाज कल्याण के कार्यो को बढ़ावा देना भी है। स्वामी जी कहते हैं कि भक्ति और पूजा हमारी संस्कृति है भगवान बाहुबली ने भी कहा है कि बिना भेद भाव के सेवा करो क्योंकि हम सभी दु:ख का पीड़ा का अनुभव करते हैं। परोपकार और नि:स्वार्थ सेवा के बिना भक्ति और पूजा अधूरे हैं।

अभिषेक के पहले दिन प्रथम कलश पर सर्वाधिक दान आता है। सन् २००६ में आर० के० मार्बल्स राजस्थान के श्री अशोक पाटनी जी ने प्रथम कलश पर १.८० लाख रू० दान में दिए थे, जिससे श्रवणबेलगोला में एक अस्पताल का निर्माण किया गया। प्रतिदिन यहाँ पर १५० बच्चों का इलाज मुफ्त में किया जाता हैं।

भट्टारक जी कहते हैं- इससे जैन समाज में एक नई क्रान्ति आ गई- सामाजिक क्रान्ति भगवान के अभिषेक का विशेषाधिकार उन लोगों को दिया जाता था, जो नि:स्वार्थ सेवा के लिए तत्पर थे। भगवान आदिनाथ ने प्रजा के हित के लिए उन्हें असि, मसि, एवं कृषि-तीन विद्यांए सिखाई।

यहाँ श्रवण बेलगोला में हम जन - कल्याण के कार्य करते हैं, जैसा कि भगवान बाहुबली ने सिखाया उन्होने बिना शस्त्र के प्रयोग के युद्ध जीता वे नि:शस्त्रीकरण एवं शान्ति की कीमत जानते थे। अत: शान्ति की एवं अध्यात्म की ऐसी समृद्धि परम्परा से भारत जगद्गुरू

बन सकता है।

स्वामी जी आगे कहते हैं कि वर्ष २०१८ के महामस्तकाभिषेक का दो मुख्य विषय हैं- शिक्षा और सेवा, हम मन्दिर के पैसे को दानादि कार्यों के लिए उपयोग करने का प्रयत्न करते हैं। केन्द्र एवं राज्य सरकारें भी ऐसे कार्यों के लिए धन का सहयोग करती हैं। विन्ध्यागिरि पहाड़ी पुरातत्व विभाग के आधीन हैं क्योंकि यह एक राष्ट्रीय सम्पत्ति है। संसार का आश्चर्य है। पहाड़ी के चारों ओर बाढ़ लगाने को स्वीकृति मिल गई है और तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए चट्टान पर नई सीढ़ियाँ बनाई जा रही है। सुरक्षा के भी पुख्ता इन्तजाम किए जाएंगे जैसे कि कुम्भ आदि मेलों के दौरान किए जाते हैं। अस्थाई आवास भोजनालय एवं चिकित्सा सुविधाओं का भी प्रबन्ध किया जायेगा।

स्वामी जी कहते हैं कि हम महामस्तकाभिषेक के दौरान प्रतिदिन पहाड़ी पर लगभग ८००० लोगों का प्रबन्ध कर पाँयेगे और अन्य बहुत से लोग इस उत्सव का विंध्यागिरि के सामने वाली चन्द्रगिरि पहाड़ी से आनन्द ले पाँयेगे। भक्तों के बैठने के लिए लकड़ी के तख्तों का और मचान का प्रबन्ध किया जायेगा और जो लोग कलश लेते हैं वे सीधे मूर्ति तक जाकर भगवान बाहुबली का मस्तकाभिषेक कर सकें, ऐसी उचित व्यवस्था की जायेगी।

एक हजार वर्ष से भी अधिक पुरानी ग्रेनाइट पत्थर की यह मूर्ति ऐसी प्रतीत होती है, मानो कल ही उकेरी गई हो, कोई दाग-धब्बा नहीं है, एकदम स्वच्छ, भट्टारक जी कहते हैं, ऐसा ही प्रश्न अग्रेजों के मस्तिष्क में भी आया था। उन्होनें यह जाँचने के लिए कि मूर्ति पहाड़ी का हिस्सा है अथवा अलग - अलग टुकड़ो से बनीं है। एक आयोग का गठन किया था, लेकिन उन्होंने पाया कि मूर्ति और पहाड़ी दोनो एक ही रचना है। उन्होंने पाया कि मूर्ति एक जीवित मूर्ति है, क्योंकि यह पहाड़ी से अथवा जमीन अलग होकर नहीं बनी है। ऐसा ही सभी वैज्ञानिको का भी अभिमत है।

भट्टारक जी ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू जब यहाँ आए थे तो उन्होंने कहा था कि यहाँ आकर भगवान बाहुबली के आगे मस्तक झुकाने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यहाँ आकर मस्तक खुद-ब-खुद झुक जाता है।

यह भगवान बाहुबली का प्रताप है, निर्मल बलशाली, करूणामय जैसे कि उनकी मूर्ति अथवा विश्व के करोड़ो श्रद्धालुओं के हृदय में विराजमान उनको नि:स्वार्थ सेवा के लिए प्रेरित करते हुए।

स्वराज जैन

(द् टाइम्स ऑफ इण्डिया)

महामस्तकाभिषेक प्रचार-प्रसार कमेटी

जैन श्रमण संस्कृतीचा वारसा श्री कलिकुंड पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन सिद्धतिशय क्षेत्र कुंडल जि. सांगली. महाराष्ट्र

श्री. बाबुराव भरमा मगदुम रा. वाळवा जि.सांगली यांनी प्रसिद्ध केलेल्या तिर्थराज कुंडल या पुस्तकेतील संदर्भान्वये दक्षिण भारतात जी जैन तीर्थक्षेत्र आहेत त्यात कुंडल हे एक सिद्धक्षेत्र आहे। अनेक प्राचीन आचार्यानी या तीर्थाला वंदन केले आहे। यति वृषभाचार्यानी आपल्या तिलोय पण्णत्ती (त्रिलोक प्रज्ञाप्ति) ग्रंथात श्लोक 1479 मध्ये म्हटले आह।

श्लोक कुंडल गिरिम्मि चरिमो केवलणाणीसु सिरिधरो सिद्धो

श्रीधर स्वामी हे कुंडलगिरीवर शेवटचे केवलज्ञानी झाले व त्याच ठिकाणी सिद्ध झाले मुक्त झाले निर्वाण झाले। जैन संस्कृतीत प्राचीन कालापासून कुंडल सिद्धक्षेत्र पवित्र, मंगल मानले आहे। प्रभावशाली पुण्य पुरुषाच्या तिर्थकराच्या, मुनीच्या निर्वाणस्थानास तिर्थ म्हणतात, निर्वाणभुमी ही दु:खी जनांना अध्यात्मिक निरोगिता प्राप्त करणेस मदत करते। तेथील वातावरण आनंदमय असते। सम्यकत्वाच्या भावशुद्धीसाठी तीर्थयात्रेची आवश्यकता असते।

दक्षिण महाराष्ट्रातील जैन तीर्थक्षेत्रापैकी सांगली जिल्हयातील कुंडल हे प्राचीन तिर्थक्षेत्र आहे। शस्त्र तसेच शास्त्र यासाठी प्रख्यात करहाटक (क-हाड) शी संबंधीत कुंडल या गावचे प्राचीन नाव कॉडीन्यपूर असे होते। कुंडलनिवासी श्री. यशवंत गोविंद लाड घर नं. 1472 व ताम्रपटाचे वाचन इतिहास संशोधक डॉ.ग.ह. खरे यांनी केले असून ते दिनांक 3 एप्रील 1955 रोजी रविवार सकाल मध्ये प्रसिद्ध करण्यात आले त्या अनुषंगे करहाडचे राजे भोपाल व त्यांची राणी नकुलादेवीने संघ तयार केला। चालुक्य राजा विक्रमादित्याने इ.स. 7 व्या शतकामध्ये कुंडल आणि परिसरातील काही गांवे दान स्वरुपात दिली। आचार्य समंतभद्र मुनींनी येथेच अनेक विद्वानांना धर्मशास्त्रात निरुत्तर केले आहे। जैन धर्मीयांचे 23 वे तिर्थंकर भ. पार्श्वनाथ व 24 वे तिर्थंकर भ. महावीर यांचे समवशरण गिरी पार्श्वनाथ या पहाडावर संपन्न झाले होते।

डॉ. सुभाषचंद्र आक्कोळे जयसिंगपूर यांनी लिखाण केलेल्या आचार्य श्री शांतीसागर चरित्र ग्रंथातील पान नं. 48 वे नमुद केले प्रमाणे प.पु. आचार्य श्री शांतीसागर महाराज यांनी गिरनारची यात्रा संपवून पुन्हा दक्षिणेत आले। येता येता पुणे मिरज मार्गावरील कुंडल रोड स्टेशनवर महाराज उतरले आणि कुंडल क्षेत्राच्या दर्शनास गेले तेथील पार्श्वप्रभुच्या मूर्तीसमोर यापुढे आपन आजन्म कोणत्याही प्रकारच्या वाहनात बसणार नाही पायीच विहार करू अशी स्वयं प्रतिज्ञा घेतली। व महाराजंची अनवाणी पदयात्रा येथुन सुरु झाली। तसेच या सिद्धातिशय क्षेत्रावर प.पू. 108 गुरुदेव समंतभद्र महाराजांनी बाहुबली या अतिशय क्षेत्राचा संकल्प केला। वीराचार्य बाबासाहेब कचनुरे यांनीही वीरसेवादलाच्या स्थापनेच्या संकल्प याच सिद्धातिशय क्षेत्रावर करुन संपूर्ण महाराष्ट्र व कर्नाटक राज्यात वीरसेवादलाच्या शेकडोंनी शाखा स्थापन केल्या। व युवा पिढीस क्षेत्र संरक्षणार्थ सज्ज केले।

कुंडल या गावामध्ये दक्षिणाभिमुखी 5 फूट 4 इंच उंचीची पद्मासन घातलेली वालुमामय कृष्णवर्णीय दिव्य तसेच भव्य अशी अतिशयकारी शिखराधिष्ठीत श्री कलिकुंड पार्श्वनाथ मुर्ती सिंहासनावर विराजमान आहे। कुंडल या नगरीत सत्येश्वर नावाचा राजा राज्य करीत होता तो काही आजाराने अवस्थेत होता। त्याच्या राणीने मंदिराच्या शेजारुन वाहत असलेल्या ओढयातील वाळुपासून भ, पार्श्वनाथाची मूर्ती तयार करुन त्या मूर्तीची आराधना करुन त्या राजास पुर्ववत जीवन प्राप्त करुन दिले अशी आख्यायिका सांगितली जाते। त्यामुळे या मंदिरास अतिशय संबोधित जाते।

मधुबन में मोक्षसप्तमी धूम-धाम से मनायी गयी

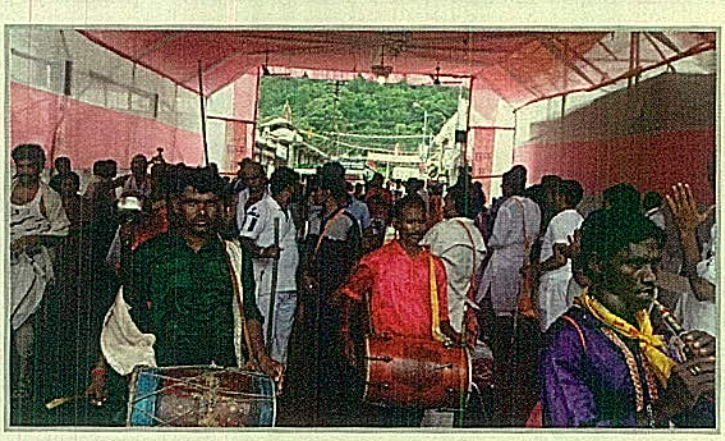

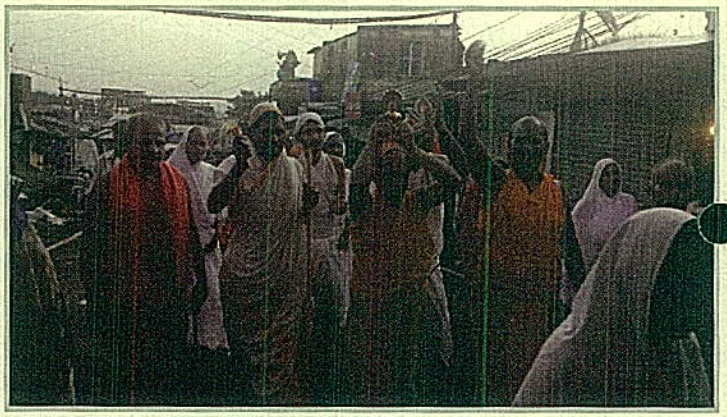

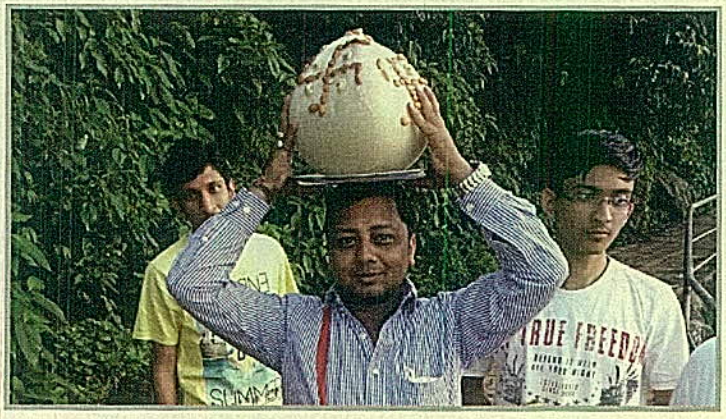

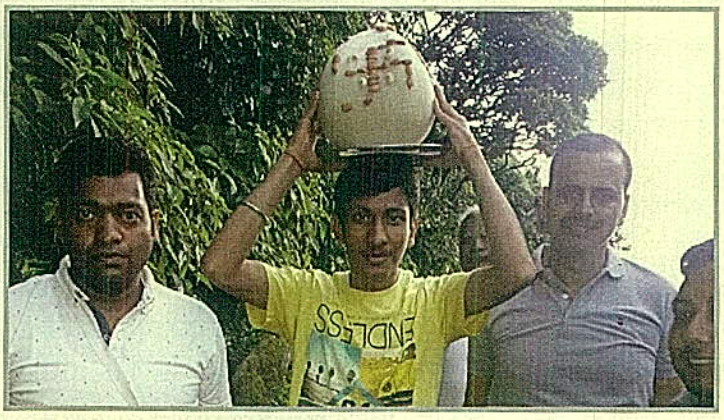

मधुबन में मोक्षसप्तमी धूम-धाम से मनायी गयी

मधुबन (झारखण्ड) एवं श्री आदर्श कुमार फरीदाबाद वालों ने ली ! शांतिधारा की बोली श्री अजय कुमार जैन इंदौर (म.प्र.) वालों ने ली ! पूजा विधि विधान की बोली श्री संदेश, अर्चित, चिन्मय जैन गोंदिया (महाराष्ट्र) वालों ने ली ! निर्वाण लाडू की बोली श्री सुधाकर राव अन्नदात्रे, मैनेजर बीसपंथी कोठी मधुबन (झारखण्ड) ने ली ! अंतिम आरती की बोली श्री राकेशचन्द्र जैन गाजियाबाद (उ.प्र.) वालों ने ली ! विभिन्न श्रद्धालुओं के मन में इस महोत्सव में शामिल होकर कुछ करने के भाव होते हैं और किसी न किसी रूप में वह हमारी तीर्थक्षेत्र कमेटी से जुड़कर कार्य करने के लिये उत्साहित रहते हैं ! जैसे दिल्ली से श्री प्रवीण जैन, राजेश जैन आदि अपनी टीम के साथ यहाँ आकर समस्त तीर्थयात्रियों को नाश्ते, प्रसाद का प्रबंध करते हैं, वहीं दूसरी ओर श्री मितेश जी जैन दिल्ली से अपने दलबल के साथ श्री पार्श्वनाथ टोंक एवं श्री गौतमस्वामी टोंक पर मेडीकल कैम्प लगाकर यात्रियों की सेवा करते हैं ! हजारीबाग से जैन युवा परिषद के अध्यक्ष श्री निर्मल जी गंगवाल सैकड़ों लोगों के साथ पदयात्रा संघ लेकर आते हैं ! यह पदयात्रा संघ करीबन १५ वर्षों से इस आयोजन में शामिल होता आ रहा है ! इनके आवास की व्यवस्था भी तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा संचालित यात्रीनिवास में वर्षों से होती आ रही है ! भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा पर्वत स्थित टोंकों पर पूजन प्रक्षाल हेतु नियुक्त पुजारियों का सहयोग व जगह-जगह तैनात सुरक्षा गार्डों की सहायता का यात्रियों ने भरपूर लाभ लिया ! इस महोत्सव में लगभग १५-२० हजार तीर्थयात्री शामिल होने का अनुमान लगाया जा सकता है ! इस महान आयोजन के उपलक्ष्य में सम्पूर्ण मधुबन को इंद्रपुरी की तरह सजाया गया, जगह-जगह स्वागत द्वार बनाये गये तथा पर्वत पर भी अस्थाई स्वागत द्वार तोरण बंधनवार सुसज्जित किये गये एवं श्री पार्श्वनाथ टोंक को पुष्पमाला से सजाया गया!

कमेटी के कार्यकर्ताओं ने मिलकर इस आयोजन को सफल बनाने में अपना जो श्रमदान किया उसके लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी उनका मनोबल, उत्साह बढ़ाने हेतु तथा धर्म के प्रति श्रद्धा समर्पण हेतु हार्दिक बधाईयाँ प्रदान करती है !

-देवेन्द्र कुमार जैन, मधुबन

बहादुरलाल अमृतलाल जैन चेरिटेबल ट्रस्ट

प्रशासनिक कार्यालय– बी.ए. जैन होस्टल, 151, कंचन बाग, इन्दौर– 452 001 फोन : 0731-2526613
website - www.bljaincharitabletrust.org

छात्रवृत्ति योजना

बहादुरलाल अमृतलाल जैन चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा शिक्षण सत्र 2017-18 के लिए भारतीय शिक्षण संस्थाओं की निम्न विधाओं में अध्ययनरत प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को प्रावीण्यता एवं आवश्यकता **(पारिवारिक वार्षिक आय रू. 6,00,000/- से कम)** की वरीयता के आधार पर छात्रवृत्ति प्रदान की जावेगी। डोनेशन/पेमेन्ट सीट/NRI कोटे से प्रवेश लेने वाले छात्रों को पात्रता नहीं होगी।

(1) **मेडिकल** (एम.बी.बी.एस., एम.एस., एम.डी., बी.डी.एस., बी.पी.टी. एवं बी.फार्मा.)

(2) **इंजीनियरिंग** (बी.ई./बी.आर्च./बी.टेक. एवं बी.टेक (आई.आई.टी.) (जे.ई.ई. में 80,000 के नीचे रैंक हो)।

(3) **कामर्स** सी.ए. (सी.पी.टी. उत्तीर्ण/आईसीडब्ल्यूए (फाउन्डेशन उत्तीर्ण)/ कम्पनी सेक्रेटरी (एक्जु. प्रोग्राम)/एम.बी.ए. (सिर्फ आई.आई.एम.से)

(4) **उच्च शिक्षा हेतु विदेश जाने वाले छात्रों के लिये ऋण छात्रवृत्ति का भी प्रावधान है।**

आवश्यक निर्देश

(1) आवेदनकर्ता सत्र 2017-18 के लिये निर्धारित आवेदन पत्र दिनांक 1 अगस्त 2017 से ट्रस्ट की website - www.bljaincharitabletrust.org से सभी 4 पृष्ठ अलग-अलग डाऊनलोड करके, पूर्ण रूप से भरकर दिनांक 15/09/2017 सायं 5.00 बजे तक आवश्यक प्रमाण पत्रों को क्रमवार नत्थी करते हुए ट्रस्ट के प्रशासनिक कार्यालय इन्दौर में रू. 30/- नगद या पोस्टल ऑर्डर के साथ जमा करवा दें। आवेदन पत्र कार्यालय द्वारा जारी नहीं किये जाते हैं, अतः इस संबंध में पूछताछ न करें। (2) आवेदन अंतिम तिथि तक निश्चित रूप से उक्त कार्यालय में पहुँचना चाहिये। बाद में प्राप्त आवेदनों पर विचार नहीं किया जावेगा। अंतिम तिथि तक इंतजार न करें एवं फार्म तुरंत भेजें। (3) अपूर्ण (आधे-अधूरे भरे हुए) या गलत जानकारी देने वाले फार्म पर विचार नहीं किया जावेगा। (4) **ट्रस्ट के मुम्बई स्थित मुख्य कार्यालय के पते पर भेजे गये आवेदन निरस्त किये जायेंगे।** (5) छात्रवृत्ति स्वीकृत होने की दशा में विद्यार्थी को फोन से सूचित किया जायेगा, अतः इस सम्बन्ध में कार्यालय से पूछताछ नहीं करें। (6) छात्रवृत्ति का वितरण दिनांक 01 नवम्बर 2017 से प्रशासनिक कार्यालय, इन्दौर द्वारा किया जायेगा।

संपर्क – अधीक्षक

संस्था की गतिविधियां

• छात्रों को शिक्षा में सहयोग • योग कक्षाओं का संचालन • 67 छात्रों की क्षमता वाले होस्टल का सफल संचालन • भट्टारक यशकीर्ति विद्यालय, प्रतापगढ़ (राज.) में धर्मशाला का निर्माण • तीर्थक्षेत्रों (श्री सम्मेदशिखर जी, श्री गिरनार जी, श्री कुण्डलपुर जी एवं श्री महावीर जी) में सर्वसुविधायुक्त धर्मशालाओं का निर्माण

मुख्य कार्यालय : ए–52, सिल्वर अपार्टमेन्ट, शंकर घानेकर मार्ग, दादर (पश्चिम), मुंबई –400 028